ज्ञान विचार
जुबान खराब होना दिमाग खराब होने की पहली निशानी है।

PKL NO.KKR/184/2024-26
हिन्दी पाक्षिक राष्ट्रीय समाचार पत्र
सच्ची व स्टीक खबर, आप तक

गजब हरियाणा

सम्पादक : जरनैल सिंह
सह संपादिका : सृष्टि देवी
छायाकार : राजरानी

Contact : 91382-03233
HAR/HIN /2018/77311

WWW.GAJABHARYANA.COM ✹ 16 जुलाई 2025 वर्ष : 8, अंक : 08 पृष्ट : 8 मूल्य: 7/- सालाना 150/- रुपये ✹ email. gajabharyananews@gmail.com

वि.स अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने घरौंडा और फुरलक में 1 करोड़ 54 लाख के विकास कार्यों की दी सौगात

घरौंडा के फुरलक रोड पर स्ट्रीट लाइट लगाने के कार्य का किया शिलान्यास

10 साल पहले और आज के घरौंडा शहर में जमीन-आसमान जितना अंतर

गजब हरियाणा न्यूज/अमित बंसल

घरौंडा । हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने शुक्रवार को घरौंडा और फुरलक में 1 करोड़ 54 लाख रुपये से अधिक के विकास कार्यों का शिलान्यास किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि भविष्य में हलके के विकास कार्यों में और तेजी आएगी। हलके की तरक्की के काम जारी रहेंगे। सरकार सत्ता को सेवा मानकर विकास करा रही है। उन्होंने कहा कि जिस गति से विकास कार्य हो रहे हैं, उससे 10 साल पहले और आज के घरौंडा शहर में जमीन-आसमान के अंतर को महसूस किया जा सकता है।

विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने घरौंडा के फुरलक रोड पर स्ट्रीट लाइट लगाने के कार्य का शिलान्यास किया। नगर पालिका की ओर से 1 किमी लंबी सड़क पर 174 लाइट लगवाई जाएंगी। हर लाइट 120 वाट क्षमता की होगी। दोनों साइड ब्रैकेट वाले खंभों की संख्या 87 और ऊंचाई 9 मीटर होगी। इस कार्य पर 85 लाख 74 हजार रुपये खर्च होंगे। उन्होंने दुर्गा कालोनी में 36.02 लाख रुपये की लागत से लगाए जाने वाले ट्यूबवेल का भी शिलान्यास किया। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की ओर से लगाए जाने वाले इस ट्यूबवेल से दुर्गा कॉलोनी, जैल सिंह कालोनी, भट्ठा कालोनी, राजीव कालोनी के लोगों की पेयजल आपूर्ति की मांग पूरी हो सकेगी। नलकूप पर कमरा बनाने, पाइप लाइन बिछाने, गेट व चारदीवारी बनाने आदि का कार्य छह महीने में पूरा कर लिया जाएगा।

फुरलक गांव में भी दी विकास कार्यों की सौगात

विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने गांव फुरलक के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद की ओर से 26.3 लाख रुपए की लागत से 3 कमरों और पंचायत की ओर से अंबेडकर भवन में 6 लाख रुपये की लागत से बनवाई जाने वाली लाइब्रेरी का भी शिलान्यास किया। घरौंडा में लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार की पूरी कोशिश है कि हलके में अधिकाधिक विकास कार्य हों। दस साल पहले के और आज के घरौंडा में जमीन-आसमान का अंतर है। भविष्य में भी निर्बाध गति से कार्य जारी रहेंगे। उन्होंने कहा कि एसएचजी की महिलाओं के लिए घरौंडा में नए प्रशिक्षण केंद्र का शिलान्यास महीने भीतर कर लिया जाएगा। सरकार महिला सशक्तिकरण के प्रति गंभीर है। महिलाएं मजबूत होंगी तो समाज व राष्ट्र भी मजबूत होगा ।विश्वास दिलाया कि सेवक के रूप में वे भविष्य में भी कार्य करते रहेंगे।

हलके में तेजी से हो रहे विकास कार्य

हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस सोच के साथ कार्य कर रहे हैं कि देश तरक्की करे और लोगों को अधिकाधिक सुविधाएं मिलें। पहले की सरकारें सत्ता को चौधर मानती थी लेकिन वर्तमान सरकार इसे सेवा मानती है। घरौंडा में कालेज, एसडीएम कार्यालय व बस अड्डे की स्थापना, अंडर पास का निर्माण, पुल, आईटीआई, कम्युनिटी सेंटर, स्कूल व अस्पतालों का उन्नयन जैसे कार्य समाज की भलाई के लिए ही हैं। चालीस से

अधिक अवैध कालोनियों को अप्रूव्ड करा कर उनमें मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने का 80 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। दस सालों में 80 नई सड़कों और 300 से ज्यादा खेतों के रास्तों को पक्का कराया गया है। मेडिकल यूनिवर्सिटी व रिंग रोड शुरू होने के बाद क्षेत्र में न केवल लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं सुलभ होंगी बल्कि रोजगार के नए अवसर भी उपलब्ध होंगे। करनाल में नई चीनी मिल से पूरे इलाके के किसानों को फायदा हो रहा है। उन्होंने कहा कि हलके में तेजी से विकास कार्य हो रहे हैं।

इस अवसर पर नगर पालिका चेयरमैन हैप्पी लक गुप्ता, सचिव रवि प्रकाश शर्मा, पार्षद बलविंद्र सिंहमार, जय नारायण, सेवा पुरूषोतम सेठी, एसडीओ रवींद्र सैनी, पार्षद अनिल जावा, पार्षद अमित गुप्ता, पार्षद अनुज गुप्ता, पार्षद पंकज गुलाटी, महामंत्री सुरेंद्र सैनी, सुरेंद्र जैन आदि मौजूद रहे।

विद्यार्थी खेल और योग के लिए भी समय निकालें

फुरलक के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि पढ़ाई जीवन का आधार है। लेकिन पढ़ाई के साथ-साथ थोड़ा सा समय खेलों और योग के लिए भी निकालना चाहिए। इससे शरीर व मन-मस्तिष्क स्वस्थ रहता है और कार्य करने की क्षमता बढ़ती है। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम, डॉ. भीम राम अंबेडकर और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जिक्र करते हुए विद्यार्थियों को नई सोच के साथ आगे बढ़ने, महापुरूषों की जीवनी पढ़कर उनके विचारों व दिखाए रास्ते पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जीवन में जो कुछ भी बनना चाहें, उसके लिए कड़ी मेहनत करें। कहा कि केवल डिग्री के लिए पढ़ाई न करें। अधिकाधिक ज्ञान अर्जित कर प्रतियोगी परीक्षाओं को पास करें। आज नौकरियां सिफारिश की बजाए मेरिट पर दी जा रही हैं। विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि किसी भी छात्र-छात्रा को पढ़ाई के लिए संशाधन की कमी महसूस हो तो उन्हें बता देना। हर संभव सहायता की जाएगी। विधानसभा अध्यक्ष ने स्कूल परिसर में पौधारोपण भी किया। इस मौके पर बीईओ रवींद्र कुमार, प्रिंसिपल वीना, एसडीओ वीरेंद्र सिंह, जेई निशांत राणा, सुखदेव पान्नू, रोहताश सैनी, मंडल अध्यक्ष रोहित भंडारी आदि मौजूद रहे।

सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार के लिए 31 जुलाई तक करें आवेदन : उत्तम सिंह

गणतंत्र दिवस पर की जाएगी पद्म विभूषण, पद्म भूषण व पद्मश्री की घोषणा

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र धूमसी

करनाल । उपायुक्त उत्तम सिंह ने बताया कि गणतंत्र दिवस 2026 के अवसर पर घोषित किए जाने वाले पद्म पुरस्कारों के ऑनलाइन नामांकन के लिए 31 जुलाई, 2025 तक आवेदन किए जा सकते हैं। इन पुरस्कारों में पद्म विभूषण, पद्म भूषण व पद्मश्री पुरस्कार शामिल हैं।

उपायुक्त ने बताया कि इन राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए नामांकन अथवा अनुशंसा केवल राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल अवार्ड.जीओवी.इन पर ऑनलाइन ही स्वीकार की जाएंगी। नामांकन करने वाले व्यक्ति अधिकतम 800 शब्द का एक व्याख्यात्मक प्रशस्ति-पत्र जिसमें अनुशंसित व्यक्ति की संबंधित क्षेत्र/विषय में विशिष्ट और अन्य उपलब्धियों/सेवाओं का स्पष्ट उल्लेख किया गया हो, प्रस्तुत करें।

उन्होंने बताया कि कि पद्म पुरस्कार, अर्थात् पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री, देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से हैं। वर्ष 1954 में स्थापित इन पुरस्कारों की घोषणा हर वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर की जाती है। यह पुरस्कार कला, साहित्य और शिक्षा, खेल, चिकित्सा, सामाजिक कार्य, विज्ञान और इंजीनियरिंग, सार्वजनिक कार्य, नागरिक सेवाओं, व्यापार और उद्योग जैसे सभी क्षेत्रों/विषयों में विशिष्ट और असाधारण उपलब्धियों/सेवाओं के लिए उत्कृष्ट-कार्य को मान्यता प्रदान करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। जाति, व्यवसाय, पद या लैंगिक भेदभाव के बिना सभी व्यक्ति इन पुरस्कारों के लिए पात्र हैं। डॉक्टर और वैज्ञानिकों को छोड़कर सार्वजनिक उपक्रमों में काम करने वाले सरकारी कर्मचारी पद्म पुरस्कार के लिए पात्र नहीं हैं। इस संबंध में और अधिक विवरण वेबसाइट पदमा अवार्ड.जीओवी.इन पर उपलब्ध है।

नवपदोन्नत प्रिंसिपलों के लिए प्रशिक्षण शिविर जारी

अनिल मलिक ने दिए सामाजिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर टिप्स

गजब हरियाणा न्यूज/ब्यूरो

जींद । हरियाणा के ऐतिहासिक गांव ईक्कस स्थित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) में नवपदोन्नत स्कूल प्रिंसिपलों के लिए 19 जुलाई तक चलने वाले द्विसाप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में डाइट की प्रिंसिपल विजय लक्ष्मी के मार्गदर्शन में हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद द्वारा एक महत्वपूर्ण सेमिनार आयोजित किया गया।

सेमिनार में हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद के नोडल अधिकारी और मंडलीय बाल कल्याण अधिकारी अनिल मलिक ने मुख्य वक्ता के रूप में 'स्कूल नेतृत्व में सामाजिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रमुख पहलू मनोवैज्ञानिक प्रेरणा का मूल्य जानें' विषय पर महत्वपूर्ण टिप्स दिए। उन्होंने बताया कि दूसरों को बेहतर समझना, उनसे जुड़ना और प्रभावी ढंग से संवाद करना सामाजिक-भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मुख्य पहलू हैं। मलिक ने प्रभावी शैक्षिक नेतृत्व के लिए पारस्परिक कौशल, रणनीतिक सोच, और सकारात्मक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

अनिल मलिक ने चिंता व्यक्त की कि आज की युवा पीढ़ी में नैतिक मूल्यों की गिरावट के लिए कहीं न कहीं हम सभी जिम्मेदार हैं, और डिजिटल तकनीक का दुरुपयोग भी इसमें नकारात्मक भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि बुद्धिलब्धि के साथ-साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता भी उतनी ही आवश्यक है। उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे विद्यार्थियों को हताश न होने दें, बल्कि उनमें चाहत, जुनून और कुछ हासिल करने की लगन पैदा करें।

मलिक ने यह भी कहा कि मनोवैज्ञानिक रूप से प्रेरित व्यक्ति स्वयं से प्रेरणा लेकर लक्ष्य निर्धारित करता है और उन्हें प्राप्त करता है। यह प्रेरणा मानव व्यवहार, उत्पादकता, संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों को प्रेरणादायी और सकारात्मक संदेश देते रहने की सलाह दी। कार्यक्रम में परामर्शदाता नीरज कुमार ने ब्लैकबोर्ड एजुकेशन के साथ-साथ शिक्षकों के प्रेरणादायी शब्दों के भावनात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ. जुगमहेंद्र, प्रवक्ता सतीश शर्मा, डॉ. अनूप शर्मा, सुरेंद्र शर्मा, डॉ. भूप सिंह सहित कई नवपदोन्नत प्रिंसिपल और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

यूपीएससी की परीक्षा पास करने वाली बेटी सिमरन बनी युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत: मंत्री कृष्ण बेदी

ग्राम पंचायत द्वारा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी और सिमरन वाल्मीकि का फूल-मालाओं से किया भव्य स्वागत

गजब हरियाणा न्यूज/ब्यूरो

असंध । यूपीएससी की परीक्षा में पलवल जिले की सिमरन वाल्मीकि द्वारा सफलता प्राप्त करने की खुशी में गांच चोचड़ा में शुक्रवार को भव्य स्वागत समारोह व शिक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की। इस मौके पर गांव के सरपंच बलदेव वाल्मीकि व समाज के लोगों ने मुख्यातिथि और सिमरन वाल्मीकि का फूल-मालाओं से भव्य स्वागत किया तथा पगड़ी पहनाकर और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इसके अलावा बाहर से आए अन्य अतिथियों का भी ग्राम पंचायत द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण बेदी ने सर्वप्रथम यूपीएससी की परीक्षा क्वालीफाई करने वाली सिमरन वाल्मीकि को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि सिमरन वाल्मीकि ने यह सफलता हासिल कर अपने गांव, शहर, प्रदेश व देश का नाम रोशन किया है और युवा वर्ग विशेषकर बेटियों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनी है। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी को भी इनसे प्रेरणा लेते हुए उच्च शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए और दृढ़ निश्चय व लगन से अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने कहा कि गरीब, मजदूर, किसान, विद्यार्थियों तथा गांवों व शहर के विकास के लिए देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के खजाने में बहुत बजट है। समूचे प्रदेश के विकास कार्यो के लिए राज्य सरकार के पास धन की कोई कमी नहीं। उन्होंने इस भव्य स्वागत कार्यक्रम के लिए गांव के सरपंच की सराहना की।

कार्यक्रम में यूपीएससी की परीक्षा पास करने वाली सिमरन वाल्मीकि ने कहा कि इस सफलता को पाने के सफर में उन्हें अपने माता-पिता सहित पूरे परिवारजनों का भरपूर साथ मिला। उन्होंने कहा कि अपनी कड़ी मेहनत और जुनून के बाद परिजनों के सहयोग ने मुझे कुछ अलग करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने संबोधन में बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के कथन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षा शेरनी का वह दूध है, जो जितना पियेगा उतना दहाड़ेगा। इसलिए आज की युवा पीढ़ी को उच्च शिक्षा हासिल कर अपने लक्ष्य को पाना चाहिए। उन्होंने यूपीएससी परीक्षा में ऑल इंडिया 869वीं रैंक हासिल कर अपने सपनों को साकार करने में सफलता पाई है। बता दें कि सिमरन वाल्मीकि जिला पलवल के गांव अतरचट्ट की रहने वाली है। कार्यक्रम में उनके साथ पिता वीर कुमार व माता स्नेहलता भी मौजूद रही, जिन्हें ग्राम पंचायत व समाज के लोगों द्वारा सम्मानित किया गया। इस मौके पर विधायक योगेन्द्र राणा के प्रतिनिधि के तौर पर पहुंचे उनके सुपुत्र दक्ष राणा ने भी सिमरन वाल्मीकि को इस सफलता के लिए बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में स्कूली बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

इस मौके पर डीडीपीओ संजय टांक, सरपंच बलदेव वाल्मीकि, नगर पालिका चेयरपर्सन सुनीता रानी, जिला उपाध्यक्ष संजय राणा, जिला महामंत्री सुभाष चंद व मानवपुरी, राजकुमार मुन्नारेहड़ी, रघुबीर गागट, सुभाष भुम्बक, भाजपा वरिष्ठ नेता सज्जन अत्री, प्रिसिंपल सुरेश शर्मा, पूर्व प्रिंसिपल सुशील वैद, ऋषिपाल बेदी, रणबीर सिंह ढाटरक, अमित राणा, बलराज सिंह, कर्मचंद, दीपक, राकेश, रविन्द्र सहित विभिन्न गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

संपादकीय.....

हरियाणा: दशा और दिशा का वर्तमान परिदृश्य

हाल के दिनों में हरियाणा कई मोर्चों पर बदलाव और चुनौतियों का सामना कर रहा है। राजनीतिक स्थिरता से लेकर आर्थिक विकास और सामाजिक मुद्दों तक, राज्य अपनी विशिष्ट पहचान बनाने के साथ-साथ भविष्य की दिशा तय करने में लगा है।

वर्तमान में, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने युवाओं और शिक्षा पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। 'हरियाणा सीईटी पास भत्ता योजना 2025' जैसी पहल, जिसके तहत ष्टश्वञ्ज पास बेरोजगार युवाओं को 9,000 रुपये प्रति माह दिए जाएंगे, यह दर्शाती है कि सरकार युवाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह कदम न केवल बेरोजगारी से जूझ रहे युवाओं को राहत देगा, बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित भी करेगा। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार और तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के प्रयास भी जारी हैं, जो राज्य के मानव संसाधन को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण हैं।

आर्थिक मोर्चे पर, हरियाणा निवेश आकर्षित करने और औद्योगिक विकास को गति देने का प्रयास कर रहा है। कृषि प्रधान राज्य होने के बावजूद, विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में विविधता लाने पर जोर दिया जा रहा है। बुनियादी ढांचे के विकास, जैसे सड़कों और परिवहन नेटवर्क में सुधार, से व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

हालांकि, कुछ चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। सामाजिक स्तर पर, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के मुद्दे पर और अधिक काम करने की आवश्यकता है, भले ही राज्य ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियानों में प्रगति की हो। कृषि क्षेत्र में किसानों की आय बढ़ाना और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटना भी प्रमुख चुनौतियां हैं। इसके अतिरिक्त, कभी-कभी सामने आने वाले कानून-व्यवस्था से जुड़े मुद्दे, जैसा कि हाल की कुछ घटनाओं में देखा गया, सरकार के लिए चिंता का विषय बने हुए हैं और इन्हें प्रभावी ढंग से संबोधित करने की आवश्यकता है।

कुल मिलाकर, हरियाणा एक परिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है। युवाओं के सशक्तिकरण, आर्थिक विकास और सामाजिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, राज्य एक उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ने की दिशा में प्रयासरत है। चुनौतियों के बावजूद, सरकार की नीतियां और पहल राज्य को एक नई 'दिशा' देने का संकेत देती हैं, जिससे 'दशा' में भी सकारात्मक बदलाव आने की उम्मीद है।

पांच साल से गैरहाजिर IAS रानी नागर, हरियाणा सरकार ने केंद्र को भेजा रिटायरमेंट का प्रस्ताव

गजब हरियाणा न्यूज/सुदेश

चंडीगढ़ । हरियाणा कैडर की 2014 बैच की आईएएस अधिकारी रानी नागर एक बार फिर सुर्खियों में हैं। लगभग पांच वर्षों से ड्यूटी से गैरहाजिर चल रहीं रानी नागर को लेकर हरियाणा सरकार ने केंद्रीय कार्मिक एवं प्रशिक्षण मंत्रालय (डीओपीटी) को जबरन रिटायरमेंट (कंप्लसरी कंप्लसरी) का प्रस्ताव भेजा है। जानकारी के अनुसार, मुख्य सचिव की ओर से रानी नागर को सेवा समाप्ति से संबंधित चौथा नोटिस भेजा जा चुका है, लेकिन उनकी ओर से अब तक कोई जवाब नहीं मिला है।

उत्तर प्रदेश की मूल निवासी रानी नागर ने अपनी सेवा हरियाणा कैडर में दी है। उनका प्रशासनिक करियर शुरुआत से ही कई गंभीर विवादों से घिरा रहा है, जिनमें वरिष्ठ अधिकारियों पर उत्पीड़न के आरोप, अपनी सुरक्षा को लेकर लगातार चिंताएं और अंतत: सेवा से इस्तीफा शामिल है। वर्तमान में, वह साल 2020 के बाद से किसी भी सक्रिय प्रशासनिक जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं कर रही हैं।

रानी नागर का प्रशासनिक करियर शुरुआती वर्षों से ही विवादों से प्रभावित रहा है।

जून 2018 में, जब वह पशुपालन विभाग में अतिरिक्त सचिव थीं, तब उन्होंने विभाग के तत्कालीन अतिरिक्त मुख्य सचिव पर दुर्व्यवहार और उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए थे। इसके बाद से ही वह लगातार मीडिया और सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बनी रहीं।

डबवाली में एसडीएम रहते हुए भी उन्होंने अपनी जान को खतरा बताया था। उन्होंने एक ऑटो ड्राइवर से कथित खतरे को लेकर तत्कालीन डीजीपी को पत्र लिखकर सुरक्षा की मांग की थी। इसी क्रम में उन्होंने कई बार आरोप लगाया कि उनकी सुरक्षा को लेकर प्रशासन गंभीर नहीं है।

2020 में एक वीडियो जारी कर रानी नागर ने आरोप लगाया था कि उन्हें चंडीगढ़ के यूटी गेस्ट हाउस में जान से मारने की कोशिश की गई। उनका दावा था कि भोजन में लोहे की कीलें तक मिली थीं। इस गंभीर आरोप ने पूरे मामले को और संवेदनशील बना दिया। उन्होंने इसे अदालत में विचाराधीन एक केस से भी जोड़ा।

लॉकडाउन के समय रानी नागर ने यूटी गेस्ट हाउस में रहते हुए कहा था कि उन्होंने कुछ वरिष्ठ अफसरों के खिलाफ कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। उन्हें गेस्ट हाउस में खुद को असुरक्षित महसूस होता था क्योंकि उन्हें पर्याप्त सुरक्षा भी नहीं दी गई थी। उन्होंने उस वक्त कहा था कि वे कर्फ्यू के बाद इस्तीफा देकर अपने घर गाजियाबाद लौट जाएंगी।

मई 2020 में जब रानी नागर ने अपने पद से इस्तीफा दिया, तब यह मामला पूरे देश में सुर्खियों में आ गया था। उन्होंने इस्तीफे की वजह खुद की और अपनी बहन की सुरक्षा बताई थी। हालांकि, राज्य सरकार ने उनका इस्तीफा अस्वीकार कर दिया और उन्हें वापस ड्यूटी पर लौटने को कहा गया। इसके बावजूद वह हरियाणा में सक्रिय सेवा में नहीं लौटीं और अपने घर गाजियाबाद लौट गईं।

उस वक्त उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने भी आईएएस अधिकारी रानी नागर के समर्थन में बयान दिया था और उनके साथ न्याय की मांग की थी। इसके बाद इस पूरे मामले ने राजनीतिक रंग भी ले लिया था।

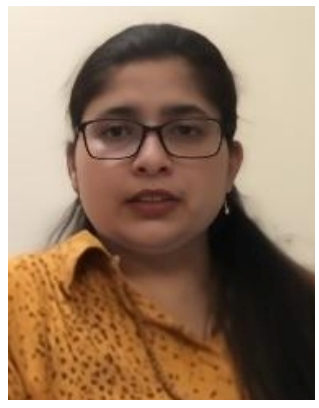

वहीं, हरियाणा के तत्कालीन केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने ट्वीट कर बताया था कि मुख्यमंत्री ने रानी का इस्तीफा नामंजूर कर दिया है।

रानी नागर को उनके इस्तीफे को लेकर तब जनता का भरपूर समर्थन मिला था। सोशल मीडिया पर लोगों ने उनकी निजी सुरक्षा और कथित आर्थिक तंगी को लेकर चिंता जताई थी। इसके बाद रानी नागर ने एक फेसबुक पोस्ट में अपील की थी कि उनका इस्तीफा जल्द स्वीकार किया जाए ताकि उन्हें पेंशन फंड मिल सके और वे अपना जीवनयापन कर सकें। उन्होंने लोगों से प्रदर्शन या आंदोलन न करने की अपील करते हुए कहा था कि न्याय की उम्मीद उन्हें केवल न्यायपालिका से है।

हरियाणा में सरकारी स्कूलों में बच्चों को सिखाई जाएगी फ्रेंच

गजब हरियाणा न्यूज/सुदेश

चंडीगढ़ । हरियाणा के सरकारी स्कूलों में शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है। इसी कड़ी में सरकार ने सरकारी स्कूलों में बच्चों को फ्रेंच भाषा पढ़ाने का निर्णय लिया है। सरकारी स्कूलों में फ्रेंच भाषा पढ़ाने के लिए शिक्षकों का चयन किया जा रहा है। फ्रेंच भाषा पढ़ाने के लिए चयनित शिक्षकों के लिए आनलाइन परीक्षा आयोजित की जाएगी। जिसमें चयनित शिक्षक फ्रेंच भाषा की पढ़ाई करवाएंगे। हरियाणा विद्यालय शिक्षा निदेशालय ने इसके लिए तैयारियां तेज कर दी हैं।

इसको लेकर माध्यमिक शिक्षा निदेशक कार्यालय हरियाणा के सहायक निदेशक (शैक्षणिक) ने गुरुग्राम एससीआरटी डायरेक्टर, प्रदेशभर के सभी जिला शिक्षा अधिकारी व सभी डाइट प्रिंसिपल को पत्र जारी किया है। जिसमें निर्देश दिए हैं कि स्कूल शिक्षा विभाग फ्रांस के दूतावास और इंस्टीट्यूट फ्रेंच एन इंडी (आईएफआई) के सहयोग से आगामी शैक्षणिक सत्र से चयनित सरकारी स्कूलों में फ्रेंच को विदेशी भाषा के रूप में शुरू कर रहा है।

चल रही शिक्षक चयन प्रक्रिया में इच्छुक उम्मीदवार जो राउंड-1 में भाग लेने में असमर्थ थे, उन्हें 28 जून तक एक लघु वीडियो और एक लिखित निबंध के रूप में अपनी रुचि की अभिव्यक्ति (ईओआई) प्रस्तुत करने का अवसर दिया था। इन प्रस्तुतियों के विस्तृत मूल्यांकन के आधार पर राउंड-2 के लिए पात्र शॉर्टलिस्ट किए गए हैं। उम्मीदवारों को अनुलग्नक-ए में सूचीबद्ध किया गया है। चयन प्रक्रिया के दौरान राउंड-2 में ऑनलाइन योग्यता मूल्यांकन किया जाएगा।

सीईटी एग्जाम को लेकर हरियाणा सरकार का फैसला, होगा नॉर्मलाइजेशन फॉर्मूला लागू

गजब हरियाणा न्यूज/सुदेश

चंडीगढ़ । हरियाणा में कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट (सीईटी) की डेट फाइनल हो चुकी है। एग्जाम दो शिफ्टों के 4 सत्रों में होगा। इस बार 13 लाख से अधिक युवा सीईटी का सीईटी का एग्जाम देंगे। एचएसएससी एग्जाम की तैयारियों में जुटा है। इसी बीच सरकार ने सीईटी एग्जाम में नॉर्मलाइजेशन फॉर्मूला लागू करने का फैसला किया।

हरियाणा कर्मचारी आयोग ने नॉर्मलाइजेशन फॉर्मूले को लागू करने को लेकर नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। दो से ज्यादा शिफ्टों में एग्जाम होने के कारण आयोग ने ये फार्मूला लागू किया है। इसके तहत सभी कैंडिडेट्स के नंबर पेपर की कठिनाई के अनुसार बराबर करने के लिए इस फार्मूले का इस्तेमाल किया जाएगा।

नॉर्मलाइजेशन फॉर्मूले की जरूरत तब पड़ती है, जब कोई एग्जाम एक से ज्यादा शिफ्ट्स में आयोजित की जाती है। ऐसा इसलिए क्योंकि हर शिफ्ट का पेपर अलग हो सकता है, जिससे कुछ छात्रों को आसान और कुछ छात्रों को कठिन पेपर मिल सकता है। नॉर्मलाइजेशन फॉर्मूला, इन अंतरों को दूर करने में मदद करता है और सभी छात्रों को समान स्तर पर आंकने में मदद करता है।

हरियाणा में 2022 में हुए सीईटी एग्जाम के दौरान नॉर्मलाइजेशन फॉर्मूले का विरोध हुआ था। इसके विरोध में युवाओं ने पंचकूला में हरियाणा स्टाफ सिलेक्शन कमीशन के बाहर धरना तक दिया था। युवाओं की मांग थी कि एक पद के लिए एक ही पेपर हो और पहले की तरह अंकों के आधार पर ही चयन हो।

जब हरियाणवी ने मराठी शख्स से कहा 'ये तेरा देश है, यहां तू नहीं काम करेगा तो कौन करेगा!'

एजेंसी

दिल्ली । भारत की 'अनेकता में एकता' की भावना को एक बार फिर पुख्ता करते हुए, हरियाणा से एक दिल छू लेने वाला वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में एक हरियाणवी शख्स हरियाणा में काम कर रहे एक मराठी व्यक्ति से न केवल हरियाणवी बोलने को कहता है, बल्कि जब वह ऐसा करने में असमर्थ होता है तो उसे देशभक्ति का असली मतलब समझाता है। यह घटना भाषाई विवादों को बढ़ावा देने वालों के लिए एक करारा जवाब बन गई है।

क्या है वीडियो में?

वायरल हो रही इस 46 सेकंड की फुटेज में, एक हरियाणवी शख्स पूछता है, 'अरे महाराष्ट्र से कौन है भाई यहां?' जिसके बाद एक मराठी युवक सामने आता है। हरियाणवी शख्स उससे उसके गांव के बारे में पूछता है, तो वह नासिक बताता है। फिर उससे हरियाणवी में बात करने को कहा जाता है। जब मराठी शख्स हरियाणवी बोलने में अपनी असमर्थता जताता है, तो उसके चेहरे पर मायूसी भरी मुस्कान उभर आती है।

इस पर हरियाणवी शख्स उससे पूछता है, 'नहीं आती? फिर यहां कैसे आया?' मराठी शख्स कुछ बोल पाता, इससे पहले ही हरियाणवी शख्स उसे टोकते हुए कहता है, 'यहां कैसे आया? यहां कैसे काम कर रहा?' यह सुनकर मराठी शख्स मायूसी वाली हंसी हंसने लगता है।

देशभक्ति का असली पाठ

ठीक इसी क्षण, हरियाणवी शख्स वह बात कहता है जो इंटरनेट पर लाखों दिलों को जीत रही है 'अरे ये तेरा देश है, यहां तू नहीं काम करेगा तो कौन करेगा, तेरा देश हूं तू जो मर्जी कर। ठीक है!' यह भावुक संवाद वीडियो के अंत में आता है।

इंटरनेट पर जमकर सराहना

यह वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है और सोशल मीडिया उपयोगकर्ता इस हरियाणवी शख्स की जमकर सराहना कर रहे हैं। लोगों का मानना है कि यह घटना उन लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है जो अक्सर विभिन्न राज्यों में भाषाई या क्षेत्रीय आधार पर विवाद पैदा करते हैं। यह वीडियो दर्शाता है कि भाषा और संस्कृति में भिन्नता के बावजूद, भारतीय होने की पहचान ही हमें एकजुट करती है। यह सिर्फ एक वीडियो नहीं, बल्कि एकता और भाईचारे का एक सशक्त प्रतीक बन गया है।

अभय चौटाला ने भाजपा और हुड्डा पर साधा निशाना, बोले- विपक्ष कमजोर होने से जनता परेशान

गजब हरियाणा न्यूज/गुरावा

गुरुग्राम । इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) ने शुक्रवार को चौ. छोटूराम भवन में एक जोन स्तरीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया, जिसमें पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला ने भाजपा सरकार और कांग्रेस नेता भूपेंद्र हुड्डा पर जमकर निशाना साधा। चौटाला ने आरोप लगाया कि मुख्य विपक्षी दल भाजपा सरकार के हाथों में खेल रहा है और भूपेंद्र हुड्डा भाजपा के एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं। अभय चौटाला ने कहा कि आज प्रदेश में यह चर्चा आम है कि लोग भाजपा को सत्ता से बाहर करना चाहते थे, लेकिन भूपेंद्र हुड्डा और उनके बेटे ने तीसरी बार भाजपा की सरकार बनवा दी। उन्होंने विपक्ष की कमजोरी को जनता की परेशानियों का कारण बताया। चौटाला ने कहा कि कमजोर विपक्ष के चलते बिजली के बिल बढ़ा दिए गए हैं, हरियाणा के हिस्से का पानी पंजाब ने रोक दिया है, और गरीब आदमी के लिए सरसों का तेल महंगा हो गया है। इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया कि पार्टी का नया संगठन बनाया गया है और इसमें नए लोगों को शामिल किया जा रहा है। उन्होंने संगठन को मजबूत करने पर गंभीरता से काम करने की बात कही और दोहराया कि इनेलो सरकार को जनविरोधी निर्णय नहीं लेने देगी। उन्होंने 25 सितंबर को स्वर्गीय चौ. देवीलाल के जन्मदिवस पर बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं को शामिल होने का आह्वान किया।

एसवाईएल (सतलुज यमुना लिंक नहर) पर पंजाब और हरियाणा के मुख्यमंत्रियों की दिल्ली में हुई बैठक पर पूछे गए सवाल के जवाब में चौटाला ने कहा कि यह बैठक पूरी तरह से बेनतीजा साबित हुई।

गुरुग्राम के विकास पर बात करते हुए चौटाला ने कहा कि शहर का विकास इनेलो ने कराया था, लेकिन कांग्रेस और भाजपा राज में शहर का विकास थम सा गया है। उन्होंने कहा कि पूरे शहर में लोग जलभराव से जूझ रहे हैं और सरकारी मौन है। चौटाला ने आरोप लगाया कि भाजपा को आम लोगों की परेशानी से कोई मतलब नहीं है और गुरुग्राम नशा तस्करी का अड्डा बनता जा रहा है। इनेलो ने इन मुद्दों पर सरकार को घेरते हुए जनता की आवाज बनने का संकल्प दोहराया।

जालंधर (पंजाब) में डॉ. अंबेडकर का चुनावी भाषण, जरूर पढ़ें

27 अक्टूबर 1951 को रामदासपुर, जालंधर (जिसे पहले जुलुंदर के नाम से जाना जाता था) में डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर का चुनावी भाषण दिया गया था

प्रिय भाइयो और बहनो! मेरा पहले भी पंजाब घूमने का विचार था, लेकिन मैं यहाँ नहीं आ सका और मुझे पता चला है कि जालंधर में हमने बहुत से लोगों को इकट्ठा किया था और वे यह जानकर निराश हुए कि मैं यहाँ नहीं आया। मुझे आशा है कि आप सभी को हुई इस असुविधा के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे। मेरे यहाँ न आ पाने से यद्यपि बहुत से लोगों को असुविधा हुई, परन्तु मैं विवश था और इसके निम्नलिखित कारण थे। पहला, कांग्रेस सरकार में चार वर्षों के दौरान, मैं सरकारी काम के बोझ तले दबा रहा और यहाँ आने का समय नहीं निकाल पाया। दूसरा, इन वर्षों में मेरा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहा और अब भी मैं पूरी तरह स्वस्थ नहीं हूँ। तीसरा, पूरे भारत के अछूतों की इच्छा है कि मैं पूरे भारत का भ्रमण करूँ और उनसे बात करूँ। आप भली-भाँति समझ सकते हैं कि हमारा देश इतना बड़ा महाद्वीप है कि एक व्यक्ति के लिए दो वर्षों में भी पूरे देश का भ्रमण करना संभव नहीं है। इसलिए मैं लोगों की इच्छा पूरी नहीं कर सका और जब वे मुझे चाहते थे, तब मैं यहाँ नहीं आ सका। इसलिए मैं चाहता हूं कि हमारे सभी लोग अपने पैरों पर खड़े हों और एकजुट हों ताकि वे मेरी सहायता के बिना तूफान से बच सकें और मुझ पर ज्यादा दबाव न डालें।

एक व्यक्ति को 52 वर्ष की आयु के बाद राजनीति छोड़ देनी चाहिए, क्योंकि सरकार भी 55 वर्ष की आयु के बाद सरकारी कर्मचारी को यह सूचना दे देती है कि वह अब सेवा के योग्य नहीं है और उसे सेवानिवृत्त हो जाना चाहिए। लेकिन आजकल के राजनेता 55 वर्ष की आयु के बाद राजनीति शुरू करते हैं ताकि वे अपनी आजीविका कमा सकें; इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि वे देश की सेवा कर पा रहे हैं या नहीं। उनके मन में बस एक ही बात होती है और वह है इससे अपने लिए कुछ प्राप्त करना। मेरा कोई स्वार्थ नहीं है। मैं अब तक अपने समाज के हित में काम कर रहा हूँ। मैं 1920 में राजनीति में आया और तब से लेकर अब तक राजनीति में हिस्सा लेता आ रहा हूँ। मैंने अपने जीवन के तीस वर्ष अपने समाज की सेवा में बिताए हैं। हालाँकि मैं राजनीति छोड़ना चाहता हूँ, लेकिन अपने समाज को संगठित करने की आवश्यकता को देखते हुए मुझे राजनीति में बने रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। इन तीस वर्षों में से आठ वर्ष मैं सरकार का सदस्य रहा। मुझे नहीं पता कि कोई ऐसा राजनेता है जो इतने लंबे समय तक लगातार राजनीति में रहा हो। मैं आठ वर्षों तक सरकार में रहा और अगर मैं चाहता तो हमेशा के लिए वहाँ रह सकता था। मुझे इस पर गर्व नहीं है, लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरी योग्यताओं के बल पर, अगर मैं वहाँ रहना चाहता, तो मुझे निकालने का किसी के पास अधिकार नहीं था। लेकिन अपने समुदाय के हित के लिए मुझे कांग्रेस सरकार की सदस्यता से इस्तीफा देना पड़ा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं जहाँ भी जाऊँ, अपने समुदाय की भलाई को हमेशा ध्यान में रखता हूँ।

जब मैं इंग्लैंड से डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की डिग्री लेकर आया, तो भारत में ऐसी योग्यता वाला कोई नहीं था। इसलिए जब मैं बंबई पहुंचा और उस मोहल्ले में बस गया जहां से मैं आया था, तो बड़ी मुश्किल से बंबई सरकार ने मेरे लिए जगह ढूंढी, क्योंकि कोई नहीं जानता था कि मैं कहां रहता हूं - यह इतना अलोकप्रिय स्थान था - और मुझसे राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर का पद स्वीकार करने के लिए संपर्क किया। मैंने प्रस्ताव ठुकरा दिया। अगर मैंने वह नौकरी स्वीकार कर ली होती, तो मैं कम से कम लोक शिक्षण निदेशक होता। मुझे तीन या चार हजार रुपये प्रति माह मिलते। मैंने पद ठुकरा दिया क्योंकि मेरे मन में अपने समुदाय की सेवा के लिए एक गहरी भावना थी जो मैं उस सेवा में रहते हुए नहीं कर सकता था। एक सरकारी कर्मचारी, आप जानते हैं, अपने समुदाय की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि उसे सरकार की इच्छा के अनुसार चलना होता है और सरकार की नीति का पालन करना होता है।

दो-तीन साल कुछ पैसे कमाने के बाद, मैं आगे की पढ़ाई के लिए फिर से इंग्लैंड गया और बैरिस्टर बनकर लौटा। बंबई लौटने पर, बंबई सरकार ने मुझे फिर से ज़िला न्यायाधीश का पद स्वीकार करने के लिए कहा। मुझे 2000 रुपये मासिक वेतन की पेशकश की गई और वादा किया गया कि कुछ समय बाद मैं उच्च न्यायालय का न्यायाधीश बन जाऊँगा। लेकिन मैंने वह भी स्वीकार नहीं किया। हालाँकि उस समय अन्य स्रोतों से मेरी आय केवल 200 रुपये ही थी।

1942 में, मेरे सामने दो सवाल थे। एक, उच्च न्यायालय का न्यायाधीश बनना और दूसरा, भारत सरकार में वायसराय की कार्यकारी परिषद का सदस्य बनना। अगर मैं उच्च न्यायालय में होता, तो मुझे 5000 रुपये मासिक वेतन और सेवानिवृत्ति के बाद 1000 रुपये पेंशन मिलती, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। मैं राजनीति में आया। मैंने अछूत समाज में जन्म लिया है और अपने समाज के लिए मरूँगा और अपने समाज का हित मेरे लिए सर्वोपरि है। मैं किसी पार्टी या संस्था में शामिल नहीं हुआ। कांग्रेस सरकार में रहते हुए मैं स्वतंत्र रहा और अपने लोगों के प्रति समर्पित रहा। कई लोगों ने सोचा कि मैं कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गया हूँ क्योंकि मैंने कांग्रेस सरकार का कैबिनेट मंत्री पद स्वीकार कर लिया था। आलोचकों ने डॉ. आंबेडकर पर कांग्रेस में शामिल होने का आरोप लगाया और कहा कि अनुसूचित जातियों को अनुसूचित जाति संघ में क्यों बने रहना चाहिए। मैंने लखनऊ में इस बारे में समझाया कि मिट्टी और पत्थर दो अलग-अलग चीजें हैं और वे कभी एक-दूसरे में नहीं मिल सकतीं। पत्थर पत्थर ही रहेगा और मिट्टी मिट्टी ही रहेगी। मैं उस चट्टान (पत्थर) की तरह हूँ जो पिघलती नहीं, बल्कि नदियों का रुख मोड़ देती है। मैं जहाँ भी रहूँ, जिस भी संगत में रहूँ, अपनी अलग पहचान कभी नहीं खोऊँगा। अगर कोई मुझसे सहयोग माँगे, तो मैं किसी नेक काम के लिए खुशी-खुशी उसे देने को तैयार हूँ। मैंने चार साल तक अपनी पूरी ताकत और पूरी ईमानदारी से अपनी मातृभूमि की सेवा में कांग्रेस सरकार के साथ सहयोग किया। लेकिन इन सभी वर्षों के दौरान मैंने खुद को कांग्रेस संगठन में विलीन नहीं होने दिया। मैं उन लोगों की मदद और सहयोग करने में खुशी महसूस करूँगा जो मीठी ज़ुबान तो रखते हैं, लेकिन जिनके इरादे और काम हमारे लोगों के हितों के खिलाफ हैं।

अब आगामी आम चुनावों की बात करें तो मैं अनुसूचित जाति के लोगों से अपील करता हूँ कि वे चुनावों को जीवन-मरण का संघर्ष समझें और आने वाले महीनों में इसी भावना से काम करें। हमें अपने उम्मीदवारों को जिताने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देनी चाहिए। मनुष्य को शक्ति उसके पीछे खड़े लोगों की संख्या और उसके पास मौजूद धन से मिलती है। हम अल्पसंख्यक हैं, हम धनी नहीं हैं। एक औसत गाँव में हमारी जनसंख्या कुल जनसंख्या के 5 प्रतिशत से अधिक नहीं है। हम 95 प्रतिशत आबादी के संयुक्त धन और शक्ति के सामने असहाय हैं। पुलिस, जो हमेशा उच्च जाति के हिंदुओं की होती है, हमारी वास्तविक शिकायतों पर कभी ध्यान ही नहीं देती; इसके विपरीत, शिकायत दर्ज कराने पर हमें सताया जाता है। गरीबी के कारण हम अधिकारियों का समर्थन नहीं पा पाते।

लेकिन हमारे पास एक शक्ति हो सकती है और वह है राजनीतिक शक्ति। यह शक्ति हमें जीतनी ही होगी। इस शक्ति से लैस होकर हम अपने लोगों के हितों की रक्षा कर सकते हैं।

क्या आप इस देश को मिली आज़ादी में इस शक्ति के प्रति आश्वस्त हैं? हम अपने देश की आज़ादी के कभी ख़िलाफ़ नहीं थे. लेकिन हम सिर्फ़ एक सवाल का सीधा जवाब चाहते थे. आज़ाद भारत में हमारा क्या होगा? मैंने गांधीजी के सामने (अन्य कांग्रेस नेताओं के बाद) यही सवाल रखा था, सिर्फ़ एक सवाल; कि स्वराज में हमारे लोगों की स्थिति क्या होगी? क्या हम आज की तरह भंगी और चमार ही बने रहेंगे; क्या हमारे बच्चों को स्कूलों में उसी तरह दाखिला नहीं मिलेगा जैसे अभी मिल रहा है, और हमारे लोगों को वैसे ही कष्ट सहना पड़ेगा जैसे वे अभी गाँवों में झेल रहे हैं? हमारे लोगों का क्या होगा? गोलमेज सम्मेलन में यह सवाल फिर उठा कि हमें स्वराज चाहिए या नहीं, मैंने गांधीजी से पूछा जो इस कदम के प्रायोजक थे, वही सवाल कि अगर भारत को स्वराज मिल गया तो वे ग़रीब लोगों के लिए क्या करेंगे? क्या हमें मुसलमानों, सिखों, ईसाइयों और एंग्लो-इंडियनों के लिए प्रस्तावित सुरक्षा उपाय दिए जाएँगे? लेकिन जब 1932 में अनुसूचित जातियों को अलग अधिकार दिए गए, तो गांधीजी ने तब तक आमरण अनशन शुरू कर दिया जब तक कि अनुसूचित जातियों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र का यह प्रावधान निरस्त नहीं हो गया। उस समय हमारे बीच एक समझौता हुआ था; लेकिन आज जो हो रहा है वह उससे बिल्कुल अलग है जिस पर सहमति बनी थी। उन्होंने उस समय वादा किया था कि कांग्रेस के टिकट पर कोई भी उम्मीदवार अनुसूचित जाति संघ के उम्मीदवारों के खिलाफ नहीं उतारा जाएगा। हम आरक्षित सीटों पर अपने लोगों को भेजना चाहते हैं, लेकिन कांग्रेस पार्टी इसमें दखल दे रही है। वे हमारी आरक्षित सीटों पर ऐसे लोगों को खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं जो मूर्ख और स्वार्थी हैं, जो कांग्रेस की %जी-हुजूरी% करेंगे। जब कोई ब्राह्मण या बनिया कांग्रेस का टिकट माँगता है, तो उससे एक सवाल पूछा जाता है। वे जानना चाहते हैं कि वह कितनी बार जेल गया है। मैं कांग्रेस से पूछना चाहता हूँ कि वे कांग्रेस का टिकट चाहने वाले अनुसूचित जातियों के लोगों से यही सवाल क्यों नहीं पूछते? और वे केवल अशिक्षित और अलोकप्रिय लोगों का ही चयन क्यों करते हैं?

संसद में 30 लोग थे। मैं उनसे पूछता हूँ कि उन्होंने वहाँ क्या किया! उन्होंने कभी कोई सवाल नहीं पूछा, कोई प्रस्ताव नहीं पेश किया और संसद में कभी कोई विधेयक विचारार्थ प्रस्तुत नहीं किया। अगर कोई बाहर से आकर देखे कि 30 सांसदों ने कोई शिकायत नहीं की है, तो वह सोचेगा कि हमारे लोग सही हैं और उन्हें किसी विशेष ध्यान की आवश्यकता नहीं है। इसलिए हम अपना सच्चा प्रतिनिधि भेजना चाहते हैं जो हमारी शिकायतों को विधानसभाओं के समक्ष रखे और उनका समाधान सुनिश्चित करे।

पहले चुनाव से ही हम कांग्रेस के खिलाफ लड़ रहे हैं क्योंकि वह अनावश्यक रूप से हमारे अधिकारों में दखलंदाज़ी कर रही है। कांग्रेस पार्टी के नेता पंडित नेहरू को ही देख लीजिए। उन्होंने पिछले 20 सालों में दो हज़ार भाषण दिए हैं, लेकिन उन्होंने एक बार भी अनुसूचित जातियों के कल्याण की बात नहीं की। इससे आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि जब कांग्रेस पार्टी के नेता इतने जद्दी हैं, तो उन्हें हमारे लोगों से कितनी सहानुभूति हो सकती है। पंडित नेहरू हमेशा मुसलमानों के पक्ष में रहे हैं। मैं नहीं चाहता कि मुसलमानों की उपेक्षा की जाए; लेकिन मैं यह भी नहीं चाहता कि मुसलमानों को उन दूसरे समुदायों की कीमत पर सुख न मिले जिन्हें ज़्यादा सुरक्षा की ज़रूरत है। मैंने सुना है कि कुछ लोग पंडित नेहरू के पास गए और अनुरोध किया कि अनुसूचित जातियों के लिए कुछ किया जाए। लेकिन पंडित नेहरू ने उनसे कहा कि उनके लिए सब कुछ किया जा चुका है और अब उन्हें किसी विशेष चीज़ की ज़रूरत नहीं है। विभाजन के समय, जब पाकिस्तानी अधिकारियों ने हमारे लोगों से पाकिस्तान में ही रहने को कहा ताकि उन्हें खुद छोटे-मोटे काम न करने पड़ें, तो मैंने पंडित नेहरू से गरीब अनुसूचित जातियों को वहाँ से निकालने के लिए कुछ करने को कहा। पंडित नेहरू ने कुछ नहीं किया। मैंने अपने लोगों को निकालने के लिए दो लोगों को पाकिस्तान भेजा था और हमारी महार बटालियन भी गरीब अनुसूचित जातियों की सुरक्षा के लिए वहाँ भेजी गई थी। अगर कांग्रेस नेताओं को हमारे लोगों से इतनी हमदर्दी है, तो कांग्रेस हमारे लिए क्या करेगी?

पंजाब विधानसभा की कुल 120 सीटों में से 21 सीटें अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित हैं और केंद्र सरकार की संसद में तीन सीटें आरक्षित हैं। मैं उन सभी दलों से एक सवाल पूछना चाहता हूँ जो इन आरक्षित सीटों पर अपनी पसंद के उम्मीदवार उतारना चाहते हैं और अनुसूचित जातियों के प्रति सहानुभूति दिखाना चाहते हैं। वे सिर्फ़ आरक्षित सीटों के ख़िलाफ़ ही उम्मीदवार क्यों उतारते हैं, सामान्य सीटों पर क्यों नहीं। अगर वे सच्चे हैं, तो उन्हें हमारे लोगों के लिए सामान्य सीटें उपलब्ध करानी चाहिए। ये सभी दल हमसे वह छीनना चाहते हैं जो हमने बड़ी मुश्किलों के बाद हासिल किया है।

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि राजनीतिक शक्ति के बिना हम इस दुनिया में नहीं रह सकते। हमने प्रांतीय विधानसभाओं और संघीय संसद में सीटें आरक्षित कर ली हैं, लेकिन यह केवल 10 वर्षों के लिए है और कोई नहीं कह सकता कि 10 वर्षों के बाद क्या होगा। अगर हमारे सच्चे प्रतिनिधि विधानसभाओं और संसद में नहीं भेजे गए, तो हमारी सारी मेहनत बेकार जाएगी; लेकिन अगर उन्हें भेजा गया, तो कुछ न कुछ ज़रूर निकलेगा। अन्यथा, सरकार और स्थानीय निकायों में हमारी आवाज़ नहीं उठ पाएगी। भारत में राजनीति का नक्शा अब बदल गया है। पहले कांग्रेस स्वराज के लिए लड़ रही थी, इसलिए सभी लोग उसमें शामिल हो गए। और जो लोग कांग्रेस का विरोध करते थे, उन्हें राष्ट्र-विरोधी माना जाता था। लेकिन अब हालात बदल गए हैं। पंजाब के कांग्रेसी पहलवानों को देखिए। एक समय था जब भार्गव और सच्चर भाई-भाई जैसे थे। उन्होंने एक-दूसरे के साथ शांति बनाए रखने का वादा किया था। लेकिन अब वे सबसे बड़े दुश्मन हैं। नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख 5 नवंबर है और आज 27 अक्टूबर है, लेकिन पंजाब से अभी तक कांग्रेस उम्मीदवारों की सूची नहीं भेजी गई है। ये दोनों लोग प्रधानमंत्री बनने के लिए बेचैन हैं। बिहार में भी यही हो रहा है। मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि विभाजन के समय इतनी शक्तिशाली कांग्रेस पार्टी इतने कम समय में इतनी कमजोर हो गई है। आज गांधी टोपी वाले को

सज्जन नहीं माना जाता। लोग या तो कांग्रेसी कहते हैं या सज्जन। कोई भी दोनों नहीं हो सकता। आज कांग्रेस की यही स्थिति है। कांग्रेस अब बूढ़ी हो गई है और वह दूसरों से लड़ने में सक्षम नहीं है और अपनी स्वाभाविक मृत्यु मर जाएगी।

अगर आप शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन को वोट देंगे तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारे उम्मीदवार आम चुनावों में ज़रूर सफल होंगे। इसमें कोई शक नहीं, बस बात यह है कि आपको सच्चे प्रतिनिधियों को वोट देना चाहिए। मतदान के दिन सभी स्त्री-पुरुषों को अपना काम-धंधा छोड़कर मतदान के लिए जाना चाहिए।

अनुसूचित जातियों के लिए सीटों का आरक्षण केवल 10 वर्षों के लिए है। मैं चाहता था कि यह आरक्षण तब तक बना रहे जब तक अस्पृश्यता है; लेकिन कांग्रेस नेता, स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल ने मेरा विरोध किया। इसलिए समिति में मौजूद अन्य लोगों को भी सरदार का समर्थन करना होगा क्योंकि वे उनकी पार्टी के थे। इसलिए, हमें अपने सच्चे प्रतिनिधियों को विधानसभाओं में भेजने का प्रयास करना चाहिए ताकि वे हमारे अधिकारों की रक्षा कर सकें और 10 वर्षों के बाद इस आरक्षण को सुरक्षित करने का भी प्रयास कर सकें। जो लोग अन्य दलों से टिकट हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं, वे भूल जाते हैं कि 10 साल बाद वे कहीं के नहीं रहेंगे। कोई भी अन्य दल उनके पास यह कहने नहीं आएगा कि वे उनके टिकट पर चुनाव लड़ेंगे। आज अन्य दल केवल हमारे वोट हासिल करने और हमारी सीटें हथियाने के लिए चिंतित हैं, न कि वे हमसे सहानुभूति रखते हैं।

जब अलग-अलग पार्टियों को अलग-अलग चुनाव चिन्ह देने का समय आया, तो हमारी पार्टी, अनुसूचित जाति महासंघ, को भी अखिल भारतीय पार्टी माना गया। अन्य पार्टियों ने बैल, घोड़ा, गधा आदि अपने चुनाव चिन्ह दिए, लेकिन आपकी सुविधा के लिए मैंने अपना चुनाव चिन्ह %हाथी% रखा है ताकि लोगों को हमारी पार्टी के उम्मीदवारों को पहचानने में दिक्कत न हो। हाथी को अन्य जानवरों से आसानी से पहचाना जा सकता है।जब से संचयी मतदान प्रणाली की जगह वितरण प्रणाली ने ले ली है, तब से। जहाँ आरक्षित सीटें हैं, वहाँ के मतदाता दो वोट डाल सकते हैं, एक आरक्षित सीट पर खड़े उम्मीदवार को और दूसरा सामान्य सीट पर खड़े उम्मीदवार को। हम एक व्यक्ति को दो वोट नहीं दे सकते। इसलिए हमें किसी ऐसी पार्टी से गठबंधन करना होगा, जिसके मतदाता अपना दूसरा वोट हमारे पक्ष में डालें। जिस पार्टी के साथ हमारा समझौता होगा, उसकी घोषणा कुछ ही दिनों में हो जाएगी और आपको उसी पार्टी को वोट देना होगा और बदले में वह पार्टी हमारे उम्मीदवारों का समर्थन करेगी। इस तरह, हमारे उम्मीदवार जीतेंगे। हमारी मतदाता संख्या इतनी मज़बूत नहीं है और ऊपर से संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र होने के कारण हमारी स्थिति और भी कठिन हो जाती है। इसलिए हमें किसी न किसी पार्टी से गठबंधन करना ही होगा।अंत में, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि अनुसूचित जातियों के लिए केवल एक ही पार्टी कुछ कर सकती है और वह है अनुसूचित जाति महासंघ। मैंने आपके लिए घर बनाया है और इसे व्यवस्थित रखना आपकी ज़िम्मेदारी है। मैंने पेड़ लगाया है, अगर आप इसे पानी देंगे, तो आपको फल मिलेंगे और इसकी छाया भी मिलेगी, नहीं तो आपको धूप में बैठना पड़ेगा। हमारा समाज बर्बाद हो जाएगा। इसलिए हर अनुसूचित जाति को अनुसूचित जाति महासंघ के बैनर तले आना चाहिए और इसे और मज़बूत बनाना चाहिए। एकजुट होकर ही हम कुछ हासिल कर सकते हैं। एकजुट होकर हम खड़े रहेंगे और विभाजित होकर हम गिर जाएँगे।

अछूत समाज की पहली आवाज: मुक्ता साल्वे: एक 10 वर्षीय छात्रा का क्रांतिकारी निबंध, जिसने उड़ा दी नींदें

भारतीय समाज में शिक्षा और समानता की मशाल जलाने वाले ज्योतिबा फुले और क्रांतिज्योती सावित्रीबाई फुले के प्रयासों को एक नन्हीं आवाज ने और बुलंद किया था। यह आवाज थी उनकी पहली अछूत शिष्या मुक्ता साल्वे की, जिसने मात्र 10 वर्ष की आयु में अपने क्रांतिकारी निबंध अपना धर्म से सदियों पुराने जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध एक ऐसी चिंगारी सुलगाई, जिसकी लौ आज भी प्रज्वलित है।

शिक्षा की राह में पहला कदम: लहुजी सालवे की दूरदर्शिता

जब ज्योतिबा फुले दंपति ने लड़कियों के लिए स्कूल खोले, तो समाज का पितृसत्तात्मक ढाँचा और जातिगत रूढ़िवादिता इतनी गहरी थी कि कोई भी माता-पिता अपनी बेटियों को स्कूल भेजने को तैयार नहीं थे। ऐसे में, भारत के प्रथम क्रांतिशिक्षक लहुजी सालवे ने असाधारण दूरदर्शिता का परिचय देते हुए अपनी भतीजी मुक्ता साल्वे को सर्वप्रथम फुले दंपति के स्कूल में दाखिल कराया। मुक्ता महाराष्ट्र की मातंग (अछूतों की एक जाति) समुदाय से थीं और 1848 में सावित्रीबाई फुले की पहली अछूत शिष्या बनीं।

अपना धर्म: एक निबंध, एक क्रांति

तीसरी कक्षा में पढ़ने वाली मुक्ता ने सत्यशोधक समाज आंदोलन के संस्कारों में पली-बढ़ी। आत्म-सम्मान की भावना से ओतप्रोत होकर उन्होंने एक निबंध स्पर्धा में अपना धर्म शीर्षक से एक लेख लिखा। यह निबंध इतना शक्तिशाली था कि इसे 3000 लोगों के सामने पढ़ा गया और इसने उस समय के जातिवादी व्यवस्था को सीधे चुनौती दी। मुक्ता का सीधा सवाल था' अगर ब्राह्मण वेद नहीं पढ़ने देते तो हमारा धर्म कौनसा है?'

1853 में, एक 10 वर्षीय अछूत लड़की ने शूद्रातिशूद्रों को गुलाम बनाने वाले हिंदू धर्म के शासन, सामाजिक असमानता, और महिलाओं के कष्टों के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाई। धर्म, संस्कृति, रूढ़ि-परंपरा के नाम पर मूलनिवासियों के साथ होने वाले अत्याचारों और हिंसा का मुक्ता ने अपने निबंध में कड़ा विरोध किया। उन्होंने अपने शूद्रातिशूद्र समाज को शिक्षित होने का आह्वान किया, क्योंकि उनका मानना था कि शिक्षा ही इस शोषण से मुक्ति का एकमात्र मार्ग है। यह निबंध आगे चलकर ज्ञानोदय अखबार में 17 फरवरी 1855 को प्रकाशित हुआ और आज भी देश भर में सामाजिक न्याय के आंदोलनों में इसका उल्लेख किया जाता है।

मुक्ता साल्वे का निबंध – अपना धर्म : कुछ अंश

मुक्ता साल्वे ने अपनी कलम से जो दर्द और सवाल व्यक्त किए, वे आज भी प्रासंगिक हैं। उनके निबंध के कुछ अंश इस प्रकार हैं

'मैं यह महसूस करके विनम्र हूँ कि भगवान ने मेरे जैसी एक अस्पृश्य (जिसे जानवर से भी बदतर माना जाता है) लड़की के दिल को मेरे लोगों (महार और मांग) के दर्द और दुखों से भर दिया है... सृष्टिकर्ता ने मांग, महार और उन जातिवादियों को भी बनाया है और वह एक है, जो मुझे लिखने के लिए ज्ञान से भर रहा है।

यदि वेद केवल एक विशेष जाति के लिए हैं, तो वे स्पष्ट रूप से हमारे लिए नहीं हैं अर्थात हमारे पास किताब नहीं है। हम बिना किसी धर्म के हैं। यदि वेद केवल विशेष जाति के लिए हैं, तो हम वेदों के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य नहीं हैं।

उन्होंने जातिवादियों पर सीधा प्रहार करते हुए कहा, जातिवादी लोग हमारे धर्महीन होने से कुछ हद तक खुश हैं। ओह, भगवान, कृपया हमें बताएं, हमारा धर्म क्या है? या आपका सच्चा धर्म क्या है कि जिसके अनुसार हम अपनी जिंदगी जी सकते हैं। वह धर्म, जहाँ केवल एक व्यक्ति को विशेषाधिकार प्राप्त हो, ऐसे किसी भेदभावपूर्ण धर्म का दावा करने के लिए कभी भी हमारे मन में प्रवेश न करें।

उत्पीड़न का क्रूर चित्रण और मुक्ति का आह्वान

मुक्ता ने पेशवा शासन के दौरान अछूतों पर हुए अमानवीय अत्याचारों का मार्मिक चित्रण किया, इन लोगों ने हम गरीब अछूतों को, हमारी जमीन से हमें दूर किया... वे मांग और महारों को लाल रंग के साथ मिश्रित तेल पीने को मजबूर करते हैं और हमारे लोगों को अपनी इमारतों की नींव में दफन कर देते हैं... बाजीराव के शासन के तहत, यदि किसी भी मांग या महार एक व्यायामशाला के सामने से गुजरा, तो वे उसके सिर को काटकर, मैदान पर अपनी तलवार को बल्ले के रूप में और उसके सिर को गेंद के रूप में प्रयोग करके खेलते थे।

उन्होंने अछूत महिलाओं और बच्चों की पीड़ा को भी उजागर किया,जब हमारी महिलाएं शिशुओं को जन्म देती हैं, तो उनके सिर पर छत भी नहीं होती। वे बारिश और ठंड से कैसे पीड़ित हैं! यदि उन्हें जन्म देकर कुछ बीमारी हो जाती है, तो उन्हें चिकित्सक या दवाईयों के लिए पैसा कहां मिलेगा? क्या आपके बीच में कोई डॉक्टर है जो ऐसे लोगों का मुफ्त में ईलाज करे?

ब्रिटिश शासन:एक अस्थायी राहत और शिक्षा का महत्व

मुक्ता ने इस तरह के उत्पीड़न से दयालु परमेश्वर द्वारा मिली उदार ब्रिटिश सरकार को एक राहत के रूप में देखा। उन्होंने उल्लेख किया कि ब्रिटिश शासन के तहत अत्याचार, मानव बलिदान और अछूतों के साथ अमानवीय व्यवहार बंद हो गए थे। अब कोई भी हमें जीवित नहीं गाड़ता, अब हमारी आबादी संख्या में बढ़ रही है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि 'ब्रिटिश शासन के तहत, पैसे से कोई भी कपड़े खरीद और पहन सकता है।'

अपने निबंध के अंत में, मुक्ता ने अछूतों को शिक्षा के महत्व को समझाया, ओह, अछूतों आप गरीब और बीमार हैं। केवल ज्ञानरुपी दवा या शिक्षा ही आपको ठीक कर सकती है। यह आपको जंगली मान्यताओं और अंधविश्वास से दूर ले जाएगी। आप धर्मी और नैतिक बनेंगे। यह शोषण को रोक देगी।'

शिरोमणि सतगुरु रविदास महाराज के प्राचीन ऐतिहासिक अस्थान में मासिक कीर्तन दरबार से गूंजा भक्ति का अमृत, रविशंकर धूराला वाले ने बांधा समां

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र। शिरोमणि सतगुरु रविदास महाराज के प्राचीन ऐतिहासिक अस्थान में रविवार को आयोजित मासिक कीर्तन दरबार भक्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर हो उठा। इस पावन अवसर पर प्रसिद्ध रविदासिया धर्म प्रचारक, श्रीमान रविशंकर धूराला वाले ने अपनी मधुर और ओजस्वी वाणी से गुरु महिमा का ऐसा बखान किया कि पूरा प्रांगण भक्तिमय हो गया।

उन्होंने अपने कीर्तन की शुरुआत 'संता ने रब वश किता प्रेम दियां पाके डोरां, रहन्दे ने मस्त दीवाने नाम दियां चढ़ियां लौंरा' जैसे भावपूर्ण शब्दों से की, जिसने उपस्थित संगत को तुरंत अपनी ओर खींच लिया। उनके द्वारा गाए गए शब्द, जैसे 'काहा भयो जो तन भया छीन छीन, प्रेम जाए तो डरपै तेरो जन,' और 'बनी रि मै तो भीम लाडली,' ने दरबार में एक अद्भुत आध्यात्मिक मस्ती का माहौल बना दिया। इन भजनों की धुन और उनके प्रभावी गायन से श्रद्धालु झूमने पर मजबूर हो गए और पूरा वातावरण गुरु चरणों में समर्पित हो गया।

धार्मिक उत्साह से भरे इस कार्यक्रम में, श्री रविशंकर धूराला वाले ने शिरोमणि सतगुरु रविदास महाराज की शिक्षाओं और सिद्धांतों को सरल व प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने गुरु के प्रेम, त्याग और समानता के संदेश पर जोर दिया, जो आज भी प्रासंगिक हैं। उनके प्रवचनों ने श्रद्धालुओं को आत्म-चिंतन और सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

मासिक कीर्तन दरबार में दूर-दराज से आए सैंकड़ों अनुयायियों ने हिस्सा लिया, जिन्होंने गुरुबाणी श्रवण कर अपने जीवन

को धन्य किया। संगत ने शांति और एकाग्रता के साथ गुरु महिमा का आनंद लिया, और कई लोग भाव-विभोर होकर झूमते रहे। कार्यक्रम के समापन उपरांत सभी श्रद्धालुओं के लिए लंगर का आयोजन किया गया। जहाँ सभी ने मिलकर प्रसाद ग्रहण किया।

हर महीने दूसरे रविवार को आयोजित होता है कीर्तन दरबार

बता दें कि इस प्राचीन ऐतिहासिक अस्थान पर बेगमपुरा टाइगर फोर्स और बेगमपुरा मानव सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में हर महीने के दूसरे रविवार को नियमित रूप से कीर्तन दरबार का आयोजन किया जाता है। जहाँ हर बार अलग-अलग संतों, महापुरुषों और समाज के विभिन्न शिरोमणि सतगुरु रविदास जी की अमृतबाणी प्रचारकों को आमंत्रित किया जाता है। यह मासिक आयोजन श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति और गुरु के संदेशों को आत्मसात करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।

देश में मोदी व प्रदेश में नायब सैनी सबका साथ सबका विकास नीति से कर रहे कार्य : कटारिया

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र। भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा के पूर्व अखिल भारतीय उपाध्यक्ष एवं श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री चौधरी सूरजभान कटारिया ने कहा है की रविदासी समाज अपनी एकजुटता से दशा और दिशा बदलने में सक्षम है पूर्व के इतिहासों को देखें जो जिम्मेदारी मेरे समाज के गौरवशाली लोगों को मिली है उसको हमने बेहतर तरीके से निभाया है आज श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ संगठन जिला कुरुक्षेत्र की शाहाबाद हल्का की रेस्ट हाउस में आयोजित एक संगठनात्मक बैठक को संबोधित करते हुए सूरज भान कटारिया ने अपने समाज की एकता और संगठनात्मक मजबूती के लिए आह्वान किया उन्होंने कहा कि समाज में सुधार के लिए हमें समय - समय पर कदम उठाने होंगे और अपने युवाओं को नशे जैसी सामाजिक कुरीतियों से दूर रखना होगा उन्होंने केंद्र को मोदी सरकार व हरियाणा की नायाब सरकार भी हमारे समाज के हित में बहुत कार्य कर रही है। बैठक में विशेष रूप से आशीर्वाद देने के लिए अंबाला शहर की मेयर शैलजा सचदेवा में भागदारी करके सामाजिक समरसता के कार्य को आगे बढ़ाया। कटारिया ने बैठक में संबोधित करते हुए समाज को विभिन्न मिशनों के द्वारा धर्म परिवर्तन कराने और नवयुवकों को नशा मुक्त बनाने के कार्यक्रम आरंभ करने का आह्वान किया। महापीठ के संगठन महामंत्री सूरजभान जी कटारिया की अध्यक्षता में संगठन के हल्का शाहबाद के सभी नवनियुक्त पदाधिकारी एवं हरियाणा के अन्य जिलों से अलग - अलग बुद्धिजीवी व्यक्तियों ने शिरकत की। इस बैठक को संबोधित करते

हुए श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ के प्रदेश अध्यक्ष हितेंद्र चौधरी ने कहा कि हम सभी को एक दूसरे के साथ खड़ा होकर एक और एक ग्यारह की भूमिका में काम करना चाहिए। आज की बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश महामंत्री कृष्ण भुकक्ल व प्रदेश महामंत्री राम कुमार राहुल, प्रदेश सोशल मीडिया पर प्रभारी सुखबीर डल्लामाजरा, जयभगवान, पंजाब सिंह, राजपाल, जगमाल सिंह चंदेल, गजे सिंह पुनिया, राजिन्द्र कुमार छोडपुर, पार्षद अमृतलाल, जिला महामंत्री तिलक राज नलवी, परवीन कुमार, अनिल कुमार, रणधीर गोलपूरा, मदन लाल त्योडा, मोहित चड़ोली आदि मुख्य रूप से आदि उपस्थित रहे।

डिजिटल गिरफ्तारी: एक फर्जी धमकी कानूनी जागरूकता जरूरी

प्रस्तावना: हाल के समय में एक नया साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहा है, जिसे 'डिजिटल गिरफ्तारी' कहा जाता है। इसमें अपराधी स्वयं को पुलिस, जांच एजेंसी या न्यायिक अधिकारी बताकर निर्दोष नागरिकों को डराते हैं। आमतौर पर पीड़ित को बताया जाता है कि उनका नाम किसी गंभीर अपराध जैसे ड्रग्स की तस्करी, फर्जी पासपोर्ट या मनी लॉन्ड्रिंग से जुड़े मामले में आया है, और अब उन्हें डिजिटल तरीके से गिरफ्तार किया जाएगा। यह पूरी तरह से फर्जी और गैरकानूनी धमकी है जिसका उद्देश्य डराकर पैसे ऐंठना या संवेदनशील जानकारी हासिल करना होता है।

धोखाधड़ी का तरीका: साइबर ठग फर्जी कॉल या वीडियो कॉल के माध्यम से खुद को दिल्ली पुलिस, सीबीआई, एनआईए या विदेश मंत्रालय का अधिकारी बताते हैं। वे यह दावा करते हैं कि पीड़ित के नाम पर किसी पार्सल में अवैध वस्तुएं मिली हैं। डिजिटल गिरफ्तारी से बचने के लिए तत्काल ऑनलाइन चङ्घष्ट, पैन कार्ड, आधार नंबर और बैंक अकाउंट संबंधी विवरण मांगे जाते हैं। कई बार वीडियो कॉल में वर्दी पहने नकली अधिकारी भी दिखाए जाते हैं।

कानूनी सच्चाई क्या है? भारत के किसी कानून में 'डिजिटल गिरफ्तारी' जैसी प्रक्रिया का उल्लेख नहीं है। गिरफ्तारी के लिए पुलिस को कानूनी प्रक्रिया का पालन करते हुए संबंधित व्यक्ति की शारीरिक उपस्थिति जरूरी होती है। डिजिटल माध्यम से गिरफ्तारी का कोई प्रावधान या मान्यता नहीं है।

प्रासंगिक कानूनी प्रावधान: भारतीय न्याय संहिता, 2023 (पूर्व में IPC)- धारा 419, स्वयं को अधिकारी बताकर धोखा देना - 3 वर्ष तक सजा - धारा 420 धोखाधड़ी - 7 वर्ष तक सजा -धारा 66-साइबर धोखाधड़ी - धारा 73- फर्जी डिजिटल दस्तावेज - धारा 74-झूठी डिजिटल पहचान

भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता, 2023-धारा 35- गिरफ्तारी के लिए पर्याप्त कारण होना जरूरी-धारा 38-गिरफ्तारी केवल कानूनी प्रक्रिया से ही संभव -धारा 48- गिरफ्तारी के 24 घंटे के भीतर मजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत करना अनिवार्य

सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000, धारा 66C- पहचान की चोरी - 3 वर्ष सजा धारा 66D- डिजिटल धोखाधड़ी - 3 वर्ष सजा धारा 67-झूठी जानकारी प्रसारित करना

प्रमुख न्यायिक निर्णय:

1. श्रेया सिंघल बनाम भारत संघ, (2015) 5 SCC 1 सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि ऑनलाइन अभिव्यक्ति के कारण किसी की गिरफ्तारी केवल तभी हो सकती है जब वह अपराध की परिभाषा में आए।

2. डी. के. बसु बनाम पश्चिम बंगाल राज्य, (1997) 1 SCC 416 गिरफ्तारी के समय व्यक्ति के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा और प्रक्रिया में पारदर्शिता अनिवार्य है।

3. अर्जुन पंडितराव खोटकर बनाम कैलाश कुशनराव गोरंत्याल, (2020) 7 SCC 1 कोई डिजिटल साक्ष्य तब तक मान्य नहीं जब तक वह भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा 65B के तहत प्रमाणित न हो।

साइबर ठगी से बचाव के उपाय, अनजान नंबरों की कॉल तुरंत काटें किसी भी अनजान व्यक्ति को KYC, पैन, आधार या बैंक जानकारी न दें, cybercrime.gov.in या राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 पर शिकायत दर्ज कराएं ज़ परिवार के वरिष्ठों को इस धोखाधड़ी से सतर्क करें ज़ केवल आधिकारिक ऐप या वेबसाइट से ही KYC अपडेट करें,सोशल मीडिया पर अपनी निजी जानकारी सीमित रखें,ट्रूकॉलर जैसे सुरक्षा टूल्स का उपयोग करें

डिजिटल गिरफ्तारी की धमकी केवल साइबर अपराधियों का डर फैलाने का तरीका है। प्रत्येक नागरिक को जागरूक रहकर अपनी सुरक्षा स्वयं करनी होगी। कानूनी जागरूकता और सतर्कता ही इस अपराध से बचने का एकमात्र समाधान है।

लेखक: सुशील कुमार B.A.LL.B. (Hons.), बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश - 221105 (यह लेख केवल विधिक जागरूकता के उद्देश्य से लिखा गया है।)

अमृतवाणी

शिरोमणि सतगुरु रविदास जिओ की
हिंदू पूजइ देहरा मुसलमान मसीति।
रैदास पूजइ उस राम कूं, जिह निरंतर प्रीति॥
व्याख्या: इस दोहे में संत रविदास यह समझा रहे हैं कि ईश्वर केवल मंदिर या मस्जिद में नहीं बल्कि हर जगह और हर इंसान के दिल में बसते हैं। इसलिए सच्ची भक्ति धर्म, जाति और संप्रदाय से परे होती है और प्रेम व समर्पण से ही भगवान तक पहुँचा जा सकता है।
धन गुरुदेव जी

अहंकार का त्याग

एक बार, एक धनी सेठ बुद्ध से मिलने आया। वह अपने साथ कई कीमती उपहार लाया था, जैसे कि सोना, चांदी और रत्न। सेठ ने सोचा कि ये उपहार बुद्ध को प्रसन्न करेंगे और वे उसे ज्ञान देंगे। बुद्ध ने सेठ को देखा और कहा, हे सेठ, मैं इन उपहारों को स्वीकार नहीं कर सकता। ये भौतिक चीजें मेरे किसी काम की नहीं हैं। मैं तुम्हें जो ज्ञान देना चाहता हूं, उसके लिए तुम्हें अपने अहंकार को त्यागना होगा।

सेठ हैरान रह गया। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसके उपहारों को ठुकरा दिया जाएगा। उसने विनम्रता से पूछा, भगवन, मैं अपने अहंकार को कैसे त्याग सकता हूँ?

बुद्ध ने उत्तर दिया, जब तुम किसी से ज्ञान प्राप्त करने जाओ, तो अपने धन, सुंदरता, या ज्ञान का अहंकार मत करो। विनम्र होकर सुनो और समझो। तभी तुम ज्ञान प्राप्त कर सकते हो।

सेठ को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने बुद्ध से क्षमा मांगी और अपने अहंकार को त्यागने का वचन दिया।

शिक्षा

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अहंकार ज्ञान और शांति के मार्ग में एक बड़ी बाधा है। जब हम अपने अहंकार को त्यागते हैं, तो हम दूसरों की बातों को सुनने और समझने के लिए अधिक खुले होते हैं। इससे हम ज्ञान और समझ प्राप्त कर सकते हैं।

कौन है ये रोज़ी रोटी की बात करने वाले ?

ग़रीब शोषित वंचित आदिवासी समुदाय के हक़ और रोजीरोटी, शिक्षा स्वास्थ्य की आवाज़ बुलंद करने वाले देश के संगठनों का तीन दिन का राष्ट्रीय मेला जयपुर में संपन्न हुआ।

वाक़ई यह अद्भुत और अनूठा संगम था जिसमें देश के हर प्रान्त से महिलाएँ पुरुष गाते बजाते, संसाधनों के बंटवारे और अधिकारों के नारे बुलंद करते रहे। अलग अलग सभाओं में इन बुनियादी मुद्दों पर तीन दिन चिंतन मनन करते रहे।

आख़िर कौन हैं वे लोग जो दलित पिछड़े महिला आदिवासी के बुनियादी मुद्दों की समाज व सरकार के राष्ट्रीय व अंतर राष्ट्रीय मंचों पर आवाज़ उठाते हैं ?

इनकी अगुवाई में अधिकतर वे लोग हैं जो सरकारी सेवा या बिज़नेस में बहुत ऊँचे ओहदे पर रहे लेकिन अभावों से जूझ रहे लोगों के मानवीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील होने के कारण नौकरियां छोड़ी, अच्छे पैकेज छोड़े और दूर दराज़ के गांवों में गरीबों को शिक्षा स्वास्थ्य रोज़ी रोटी के लिए जागृत करते हैं और मुश्किल हालातों में भी अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। इन्हीं लोगों के संघर्ष के बाद सूचना का अधिकार, शिक्षा और खाद्य सुरक्षा का अधिकार मिला।

इनमें अधिकतर तो देश विदेश के उच्च शिक्षित वे महिला पुरुष हैं जो दलित पिछड़े आदिवासी समुदाय में तो जन्मे नहीं है लेकिन अब वे इन्हीं के हो गए हैं और अपने जीवन को सार्थक करते हुए वंचितों की अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे हैं।

ये चाहते तो भौतिक सुखों के जीवन जी सकते थे लेकिन इन्होंने दलित पिछड़े आदिवासी समुदाय के बीच रहकर अपनी शिक्षा और जीवन को सार्थक करना ज़्यादा उचित समझा।

डॉ.अम्बेडकर भवन झालाना जयपुर के विशाल सुंदर प्रांगण में आयोजित तीन दिन के इस मेले में देश की रंग बिरंगी संस्कृति में मुट्ठी तानकर हकों के लिए आवाज़ भी खूब बुलंदी से उठी।

सवाल यह उठता है कि ऐसे आयोजन द्वारा गरीबों की बुनियादी मुद्दों की माँग दलित पिछड़े आदिवासी समाज के वे लोग क्यों नहीं उठाते हैं जो आरक्षण का लाभ लेकर साधन संपन्न है वे लोग रिटायर होने के बाद भी किसी तरह शासन व सत्ता से चिपके रहकर चापलूसी कर सुख भोगना चाहते हैं।

विडंबना यह है कि दलितों पिछड़ों आदिवासियों की शिक्षा, स्वास्थ, रोज़ी रोटी के आंदोलनों में इस वर्ग के साधन सम्पन्न वर्ग कहीं नज़र नहीं आता। ये लोग हमेशा आरक्षण द्वारा नौकरी, विधायक, सांसद बनने की लालसा में ही अपना जीवन खो देते हैं।और इसी समाज का पीछे छूट गया समाज इनसे हमेशा आस लगाए रहता है।

उम्मीद की जाती है कि एस वर्ग के आरक्षण का लाभ ले चुके शिक्षित और विकसित लोग पै बैक टू सोसाइटी के तहत अपनी ज़म्मिदारियों को महसूस करेंगे, सहज सरल होकर समाज के बीच जाएंगे और उनकी शिक्षा, रोज़ी रोटी की बात करेंगे. उन्हें अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वास व सामाजिक, धार्मिक कुरीतियों के मकड़जाल से बाहर निकालकर एक खुशहाल समाज के निर्माण में अपनी ज़म्मिदारी निभाएंगेज सबका मंगल हो ..

डॉ. एम एल परिहार,
पाली, जयपुर

स्नेहा सोलख:आत्मबोध से वर्ल्ड रिकॉर्ड तक का सफर – एक कलाकार जो रच रही है अपना भविष्य!

गजब हरियाणा न्यूज
डॉ जरनैल सिंह रंगा

कुरुक्षेत्र। कला की दुनिया में एक नया अध्याय लिखने को तैयार हैं बहुमुखी कलाकार स्नेहा सोलखे, जो अब न केवल अपनी कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं, बल्कि अपने भविष्य को भी अपनी कॉमिक बुक के माध्यम से स्वयं लिख रही हैं। पिछले 15 वर्षों से व्यावसायिक रूप से सक्रिय स्नेहा, अपनी गायन, नृत्य, चित्रकला और एक जन्मजात हीलर के रूप में पहचान रखती हैं। उनका मानना है कि ये सभी गुण उनकी आत्मा में आदिकाल से समाहित हैं, संभवत: पिछले जन्मों से भी।

एक नया अध्याय: भविष्य को चित्रित करती कॉमिक बुक

स्नेहा एक ऐसी अद्वितीय कॉमिक बुक या मैगज़ीन सीरीज़ पर काम कर रही हैं जो उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम तो बनेगी ही, साथ ही उनके भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी भी करेगी। स्नेहा का कहना है कि वे हाल ही में एक कर्मिक चक्र से मुक्त हुई हैं, जो 2015 से 2025 तक चला। यह चक्र उन्हें कई अदृश्य तरीकों से रोक रहा था, लेकिन अब वे इससे बाहर निकल चुकी हैं।

10 जुलाई 2025: आत्मबोध का ऐतिहासिक दिन

गुरु पूर्णिमा, 10 जुलाई 2025 का दिन स्नेहा के जीवन में एक ऐतिहासिक मोड़ लेकर आया। इस दिन उन्हें एक गहन आत्मबोध हुआ, जब उन्होंने महसूस किया — 'किसी ने मुझे कुछ नहीं सिखाया। जो कुछ भी मैंने सीखा, वो मैंने खुद सिखाया।' इसी प्रबल एहसास के साथ उन्होंने खुद को अपने जीवन की गुरु मान लिया। उसी दिन उन्होंने यह दृढ़ निश्चय किया कि अब वे अपने भविष्य की निर्माता खुद होंगी, और अपनी रचनात्मकता के माध्यम से उसे आकार देंगी।

एक प्राचीन आत्मा, एक नई पहचान: विश्व रिकॉर्ड की ओर अग्रसर

स्नेहा कहती हैं, 'मुझे लगता है मेरी आत्मा बहुत पुरानी है। मेरी कला, गायन, हीलिंग — यह सब मानो पहले से ही मुझमें था। अब मैं बस उसे याद कर रही हूँ।' यह गहरा आत्मबोध ही अब उनके कार्य का ईंधन बन गया है, और वे एक असाधारण उपलब्धि की ओर अग्रसर हैं: एक विश्व रिकॉर्ड।

यह कॉमिक बुक केवल एक कला प्रोजेक्ट नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक दस्तावेज़ है, जहाँ कला और आत्मा का अद्भुत मिलन होता है। स्नेहा का उद्देश्य अपनी इस अनूठी कहानी के माध्यम से दूसरों को प्रेरित करना है — यह दिखाना कि कोई भी व्यक्ति स्वयं का गुरु बन सकता है, कर्मों के चक्र को तोड़ सकता है, और अपने भविष्य को जागरूक होकर रच सकता है। इस पुस्तक के माध्यम से स्नेहा एक ऐसा वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाना चाहती हैं, जो न केवल रचनात्मकता में बल्कि आध्यात्मिक नवाचार में भी एक मिसाल बने।

कलाकार परिचय:

नाम: स्नेहा सोलखे पेशा: कलाकार, गायिका, नृत्यांगना, हीलर

अनुभव:15+ वर्ष का व्यावसायिक अनुभव

वर्तमान प्रोजेक्ट: भविष्य की भविष्यवाणी करती कॉमिक बुक/मैगज़ीन (रिलीज: 2025)

दृष्टि: कला और आध्यात्मिकता के संगम से एक अनूठा विश्व रिकॉर्ड स्थापित करना।

सीजेआई ने बदला 64 साल पुराना नियम सुप्रीम कोर्ट में अब ओबीसी को भी मिलेगा आरक्षण

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

नई दिल्ली । भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए अपने कर्मचारियों की भर्ती में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) को आरक्षण देने की घोषणा की है। यह महत्वपूर्ण निर्णय पूर्व मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ और वर्तमान मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई के नेतृत्व में लिया गया है, जिसने 64 साल पुराने नियम को बदल दिया है। इस पहल से सुप्रीम कोर्ट में नियुक्ति प्रक्रिया में सामाजिक समावेशिता को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

3 जुलाई को जारी एक राजपत्र अधिसूचना में इस बदलाव की जानकारी दी गई। बताया गया कि भारत के संविधान के अनुच्छेद 146(2) के अंतर्गत प्राप्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए, 1961 के सुप्रीम कोर्ट ऑफिसर्स एंड सर्वेंट्स (सेवा और आचरण की शर्तें) नियमों में संशोधन किया गया है। यह संशोधन सर्वोच्च न्यायालय की नियुक्तियों में आरक्षण के दायरे को विस्तृत करता है।

संशोधित नियम और आरक्षण का स्वरूप

संशोधित नियम 4 के अनुसार, 'प्रत्यक्ष भर्ती में अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), दिव्यांग, पूर्व सैनिक और स्वतंत्रता सेनानियों के आश्रितों के लिए आरक्षण भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी अधिसूचनाओं और आदेशों के अनुसार लागू किया जाएगा।' यह स्पष्ट करता है कि अब से सुप्रीम कोर्ट में सीधी भर्ती के पदों पर ओबीसी वर्ग के उम्मीदवारों को भी आरक्षण का लाभ मिलेगा।

अब तक की स्थिति

अब तक, सुप्रीम कोर्ट में कर्मचारियों की नियुक्तियों में केवल अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के लिए ही आरक्षण का प्रावधान था। ओबीसी वर्ग के लिए कोई स्पष्ट और समर्पित प्रावधान मौजूद नहीं था, जिसके कारण इस वर्ग के उम्मीदवारों को शीर्ष अदालत में कर्मचारियों के रूप में नियुक्त होने के समान अवसर प्राप्त नहीं हो पाते थे। यह पहली बार है कि ओबीसी वर्ग के उम्मीदवारों को भी न्यायालय की स्टाफ नियुक्तियों में औपचारिक रूप से अवसर प्रदान किया जाएगा, जिससे भर्ती प्रक्रिया अधिक समावेशी बनेगी।

'पोस्ट आधारित' आरक्षण प्रणाली

नई आरक्षण व्यवस्था रिक्ति आधारित न होकर 'पोस्ट आधारित' होगी। यह प्रणाली 1995 में सुप्रीम कोर्ट की पांच-न्यायाधीशों की संविधान पीठ द्वारा दिए गए प्रसिद्ध आर.के. सभरवाल बनाम पंजाब राज्य फैसले पर आधारित है। इस ऐतिहासिक फैसले में यह निर्धारित किया गया था कि आरक्षण पोस्ट के अनुसार तय होना चाहिए, न कि सालाना रिक्तियों की संख्या के आधार पर।

सभरवाल फैसले के अनुसार, प्रत्यक्ष भर्ती और पदोन्नति के लिए अलग-अलग रोस्टर होने चाहिए। इसके अतिरिक्त, एक बार कोई पोस्ट किसी आरक्षित श्रेणी को आवंटित हो जाए, तो वह स्थायी रूप से उसी श्रेणी की बनी रहेगी, भले ही उस पद पर नियुक्त व्यक्ति सेवानिवृत्त हो जाए। यह सुनिश्चित करेगा कि आरक्षित पदों की पहचान और उपलब्धता समय के साथ स्थिर बनी रहे।

ऐतिहासिक कदम और भविष्य के निहितार्थ

सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय, विशेष रूप से ऐसे समय में जब देश में आरक्षण और सामाजिक न्याय को लेकर बहस जारी है, बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यह दर्शाता है कि न्यायपालिका स्वयं भी अपनी आंतरिक प्रक्रियाओं में सामाजिक समानता और प्रतिनिधित्व के सिद्धांतों को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस कदम से सुप्रीम कोर्ट के कर्मचारियों में विविधता बढ़ने की उम्मीद है, जिससे विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों के लोग सर्वोच्च न्यायिक संस्था का हिस्सा बन सकेंगे। यह निर्णय न केवल ओबीसी समुदाय के लिए रोजगार के नए अवसर खोलेगा, बल्कि न्यायपालिका की समावेशी प्रकृति को भी मजबूत करेगा।

यह देखना दिलचस्प होगा कि यह बदलाव आने वाले समय में सुप्रीम कोर्ट के कार्यबल की संरचना को कैसे प्रभावित करता है।

परमात्मा की परिभाषा क्या है ?

परमात्मा की परिभाषा? परमात्मा और परिभाषा? परमात्मा तो उसी का नाम है जिसकी कोई परिभाषा नहीं है। परमात्मा अर्थात अपरिभाष्य।

इसलिये परमात्मा की परिभाषा पूछोगे, उलझन में पड़ोगे। जो भी परिभाषा बनाओगे वही गलत होगी। और कोई परिभाषा पकड़ ली तो परमात्मा को जानने से सदा के लिये वंचित रह जाओगे।

परमात्मा समग्रता का नाम है। और सब चीजों की परिभाषा हो सकती है समग्रता के संदर्भ में, पर समग्रता की परिभाषा किसके संदर्भ में होगी?

जैसे हम कह सकते हैं कि तुम च्वांगत्सु के छप्पर के नीचे बैठे हो, च्वांगत्सु का छप्पर वृक्षों की छाया में है, वृक्ष चांदत्तारों की छाया में हैं, चांदत्तारे आकाश के नीचे हैं, फिर आकाश। फिर आकाश के ऊपर कुछ भी नहीं। सब आकाश में है तो आकाश किस में होगा? यह तो बात बनेगी ही नहीं। जब सब आकाश में है तो अब आकाश किसी में नहीं हो सकता। इसलिये आकाश तो होगा, लेकिन किसी में नहीं होगा।

ऐसे ही परमात्मा है। परमात्मा का अर्थ है, जिसमें सब है; जिसमें बाहर का आकाश भी है और भीतर का आकाश भी है, जिसमें पदार्थ भी है और चैतन्य भी; जिसमें जीवन भी है और मृत्यु भी--दिन और रात, सुख और दुख, पतझड़ और बसंत, जिसमें सब समाहित है। परमात्मा सारे अस्तित्व का संदर्भ है, उसकी पृष्ठभूमि है। इसलिये स्वयं परमात्मा की कोई परिभाषा नहीं हो सकती।

ऐसा नहीं है कि परिभाषा न की गई हों; आदमी ने परिभाषाएं की हैं, लेकिन सब परिभाषाएं गलत हैं। हो ही नहीं सकती परिभाषा, तो ठीक होने का कोई उपाय ही नहीं है। परमात्मा को जाना जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है, जीया जा सकता है, उसका स्वाद लिया जा सकता है; लेकिन परिभाषा? परिभाषा, मत पूछो। और अगर तुमने तय किया कि पहले परिभाषा करेंगे, फिर यात्रा करेंगे, तो न तो परिभाषा होगी, न कभी यात्रा होगी।

परिभाषा तो छोटी-छोटी चीजों की हो सकती है। शब्दों की सामर्थ्य कितनी है? शब्द में कुछ भी कहोगे, सीमित हो जायेगा; जैसे ही कहोगे वैसे ही सीमित हो जायेगा।

सत्य, इसीलिए कहते ही असत्य हो जाता है। बोले कि सत्य की विराटता गई। लाओत्सु जीवन-भर चुप रहा, नहीं बोला। हजार बार पूछा गया सत्य के संबंध में, चुप रहा। और सब चीजों के संबंध में बोलता था, लेकिन सत्य के संबंध में चुप रह जाता था। और अंत में जब बहुत उस पर आग्रह डाला गया, जोर डाला गया कि जीवन से विदा लेते क्षण कुछ तो सूचना दे जाओ, तुमने जो जाना था, तुमने जो पहचाना था, उसकी--तो उसने जो पहला ही वचन लिखा वह था- सत्य बोला कि झूठ हो जाता है। कोई बोला गया सत्य सत्य नहीं होता। कारण? सत्य का अनुभव तो होता है निशब्द में, शून्य में, और जब तुम बोलते हो तो शून्य को समाना पड़ता है छोटे-छोटे शब्दों में।

एक पिता अपने छोटे बच्चे को समझा रहा था--महान नेपोलियन का प्रसिद्ध वचन कि इस जगत में कुछ भी असंभव नहीं है। वह छोटा बच्चा खिलखिलाकर हंसने लगा। उसने कहा गलत! बाप ने कहा कि तू कहता है गलत! नेपोलियन ने कहा है कि इस जगत में कुछ भी असंभव नहीं है। उस लड़के ने कहा कि मैं अभी करके बता सकता हूं एक चीज, जो बिलकुल असंभव है, क्योंकि मैं कई दफे करके देख चुका हूं। वह भागा, स्नान-गृह से उठा लाया टुथपेस्ट। टुथपेस्ट को पिचकाकर उसने बाहर निकाल दिया और पिता से कहा कि इसको भीतर करके दिखा दो, सिद्ध हो जायेगा कि नेपोलियन ठीक कहता है कि गलत कहता है।

अब टुथपेस्ट बाहर निकल आया, इसको भीतर कैसे करोगे? छोटे बच्चे ने ठीक किया। छोटे बच्चे की सामर्थ्य...समझ के अनुसार बिलकुल ठीक उत्तर दिया, नेपोलियन को गलत कर दिया!

इस जगत में बहुत कुछ है जो असंभव है। और सच तो यह है वही पाने योग्य है जो असंभव है। विरोधाभास मालूम होगा। परमात्मा को कहना असंभव है, इसलिए परमात्मा पाने योग्य है। कहा जा सकता होता, किताबों में लिख दिया गया होता, स्कूलों में पढ़ा दिया गया होता, लोगों ने कंठस्थ कर लिया होता। फिर बात बड़ी आसान हो गई होती, बड़ी सस्ती हो गई होती, दो कौड़ी की हो गई होती। न आज तक कोई कह सका है परमात्मा को न कभी कोई कह सकेगा; इसलिये अनुभव सदा ही क्वांरा है। जब भी तुम जानोगे, उधार नहीं होगा। तुम ही जानोगे। और जानते ही तुम गूंगे हो जाओगे। और सब बोल सकोगे, बस परमात्मा के संबंध में एकदम चुप्पी साध जाओगे।

शब्द तो बड़े छोटे-छोटे हैं। अगर कहो परमात्मा प्रकाश है, तो फिर अंधेरे का क्या होगा? ऐसा कहा है शास्त्रों में कि परमात्मा प्रकाश है। चलो मान लें इसे परिभाषा, फिर अंधेरे का क्या होगा? फिर अंधेरा कहां जायेगा? अंधेरा भी है, प्रकाश से कहीं ज्यादा है। प्रकाश तो कभी होता है कभी नहीं भी होता; अंधेरा सदा है, शाश्वत है। अंधेरे को कहां रखोगे? अगर कहा परमात्मा प्रकाश है, तो अंधेरा बाहर पड़ गया। अगर कहा परमात्मा अंधेरा है, तो प्रकाश बाहर पड़ गया। अगर कहो परमात्मा अंधेरा प्रकाश दोनों है, तो विरोधाभास होता है। दोनों एक साथ हो नहीं सकता। एक ही कमरे में अंधेरा और प्रकाश करके दिखाओ। प्रकाश करोगे, अंधेरा खो जायेगा; अंधेरा बचाओगे, प्रकाश न कर सकोगे। तो दोनों साथ कैसे होंगे? तब एक असंभव बात हो गई। तो यह भी नहीं कह सकते कि दोनों है।

फिर चौथा उपाय यह है कि कहो कि दोनों नहीं है--न प्रकाश है न अंधेरा है। वह भी बात ठीक नहीं, क्योंकि फिर प्रकाश का उदभव कहां से होगा? फिर अंधेरे का आविर्भाव कहां से होगा? सब उसी से उमगता है, सब उसी में वापिस लीन हो जाता है।

नहीं, शब्द उसे नहीं कह पायेंगे। और परिभाषाएं तो शब्दों से बनती हैं। और न ही मूर्तियां उसे कह पायेंगी, क्योंकि मूर्तियां भी आखिर मनुष्य गढ़ता है। न चित्र उसे कह पायेंगे, न संगीत उसे कह पायेगा, न काव्य। यहां तक कि तुम अगर चुप हो जाओगे तो तुम्हारी चुप्पी भी उसे न कह पायेगी, क्योंकि चुप्पी भी एक इशारा है। सभी इशारे छोटे हैं। उसे मौन से भी नहीं कहा जा सकता, मुखरता से कहने की तो बात ही अलग है, क्योंकि मौन भी सीमित कर देता है। अगर तुम कहो कि मौन से तो कहा जा सकता है। पूछा कि परमात्मा है, और जिससे पूछा वह चुप रह गया। अगर परमात्मा मौन है तो फिर शब्दों का जन्म कहां से है? फिर शब्द कहां से आते हैं? उसे शब्द कहो तो फिर मौन भी तो है, मौन कहां से आता है?

जैसे ही तुमने परिभाषा की वैसे ही उलझन बढ़ी, घटेगी नहीं। तुमने तो पूछा है घटाने को कि परिभाषा साफ हो जाये तो यात्रा सुगम हो। लेकिन परिभाषा साफ होगी नहीं, और उलझती जायेगी; जितना सुलझाओगे उतनी उलझती जायेगी। और परिभाषा में बहुत उलझ गये तो दर्शन-शास्त्र में डूबे रह जाओगे। धर्म से तुम्हारा कभी संबंध न हो पायेगा। फिर तुम व्यर्थ शब्दों की खाल निकालते रहोगे, बाल की खाल निकालते रहोगे, तर्क-जाल में गिर जाओगे। और तर्कों के जंगल विराट हैं, उनका कोई अंत नहीं। जो उनमें प्रवेश करता है, बहुत मुश्किल हो जाता है उसका निकलना। पांडित्य में जो भटक गया उसका लौटना बहुत मुश्किल हो जाता है, बहुत दूभर हो जाता है। अज्ञानी पहुंच जाते हैं, पंडित नहीं पहुंच पाते।

सौ-सौ सांचे बना रहा तू,
किसी एक में मैं आ जाऊं!
यह तो ज्यों त्रिकोण के मुख में
वर्गाकार दंड को रखना!
यह तो जैसे कनक-कसौटी पर
हीरे का मोल परखना!
यह तो कठिन असंभव-सा है,
जैसे गूंगे को पंचम स्वर!
मानो, कोई चला मापने
वामन अपने पद से अंबर!
तेरे ये सांचे सब सीमित,
मैं असीम किस भांति समाऊं?

सांचा तो सीमित ही होगा। सांचा तो असीम नहीं हो सकता, नहीं तो फिर सांचा कैसे होगा?

तेरे ये सांचे सब सीमित,
मैं असीम किस भांति समाऊं?

और आदमी ने कितने सांचे बनाये...जैनों ने, बौद्धों ने, ईसाइयों ने, मुसलमानों ने, हिंदुओं ने, पारसियों ने कितने सांचे नहीं ढाले! ये सारी दुनिया के धर्म हैं क्या? परमात्मा को प्रगट करने के लिये की गई चेष्टायें; परमात्मा की परिभाषा बनाने के उपाय।

सौ-सौ सांचे बना रहा तू,
किसी एक में मैं आ जाऊं!

लेकिन कोई सांचा उसे पकड़ नहीं पाया। इसका यह अर्थ नहीं है कि कोई उसे नहीं पकड़ पाया। जिसने सब सांचे तोड़ दिये वह उसे पकड़ पाया। जिसने सब शास्त्र छोड़ दिये वह उसे पकड़ पाया। जिसने सारे संप्रदायों की सीमाओं का उल्लंघन कर दिया वह उसे पकड़ पाया।

यह तो ज्यों त्रिकोण के मुख में
वर्गाकार दंड को रखना
ऐसा ही असंभव काम कर रहे हो तुम- त्रिकोण के मुख में वर्गाकार दंड को रखना।
यह तो जैसे कनक-कसौटी पर
हीरे का मोल परखना!

सच है कि सोने को कसा जा सकता है पत्थर पर, मगर अगर हीरे को कसोगे तो पागल हो जाओगे? हीरे को कैसे कसोगे सोने की कसौटी पर?

शब्द बने हैं जगत की अभिव्यक्ति के लिये। शब्द बने हैं सामाजिक आदान-प्रदान के लिये। शब्द बने हैं दो मनुष्यों के बीच संवाद हो सके, इसलिए। यह शब्दों की सीमा है। शब्द मनुष्य और परमात्मा के बीच संवाद हो सके, इसलिये नहीं बने। मनुष्य और परमात्मा के बीच कोई भाषा नहीं है।

लेकिन दावेदारों का तो क्या कहना। दावेदारों की मूढ़ता का तो क्या कहना! कोई घोषणा करता है कि संस्कृत देव-भाषा है। देव-भाषा! फिर कोई कहता है कि नहीं, अरबी उसकी असली भाषा है, नहीं तो कुरान अरबी में बोलता वह? फिर कोई कहता है नहीं, अरेमैक...क्योंकि जीसस अरेमैक बोले। फिर कोई कहता है हिब्रू, क्योंकि मोजिज हिब्रू में बोले। जरूर मोजिज हिब्रू में बोले और कृष्ण संस्कृत में बोले और बुद्ध पाली में और महावीर प्राकृत में; मगर परमात्मा की कोई भी ये भाषायें नहीं हैं। परमात्मा और मनुष्य के बीच भाषा का संबंध ही नहीं बनता। परमात्मा और मनुष्य के बीच संबंध ही तब बनता है जब सब भाषा गिर जाती है। मुखरता तो मुखरता, मौन भी गिर जाता है। न मौन रह जाता न मुखरता रह जाती है। ऐसा सन्नाटा कि यह भी बोध नहीं रह जाता कि मैं चुप हूं। जब तक तुम्हें यह बोध है कि मैं चुप हूं तब तक जानना शब्द अभी मौजूद हैं, छिपे हैं। यह बोध भी तो शब्द में ही होगा न, जब तुम सोचोगे कि मैं चुप हूं! तुम कैसे सोचोगे कि मैं चुप हूं? तुम कैसे जानोगे अपने भीतर कि मैं चुप हूं, जब तुम भीतर भी जानोगे कि मैं चुप हूं तुमने शब्द बना लिये। चुप्पी भी शब्द बन गई। तुमने कहा मैं मौन हूं, मौन भी शब्द हो गया। तो मुखरता भी खो जाये और मौन की भी याद न रह जाये, ऐसी विस्मृति हो, ऐसी गहन विस्मृति हो, ऐसा नशा छा जाये, ऐसी मादकता हो, ऐसी मस्ती हो, ऐसे पी बैठो अस्तित्व के रस को--तब जाना जाता है। लेकिन संस्कृत कोई उसकी भाषा नहीं है और न अरबी और न हिब्रू। कोई भाषा उसकी भाषा नहीं है।

दूसरे महायुद्ध में जर्मन हार गये। एक हारा हुआ सेनापति एक अंग्रेज सेनापति से बात कर रहा था कि हम हार कैसे गये? हमारी ताकत तुमसे कम न थी, ज्यादा थी। हमारे सैनिक तुमसे कमजोर न थे, ज्यादा शक्तिशाली थे। हम हार कैसे गये? तुम क्या कारण पाते हो हमारे हारने का?

अंग्रेज सेनापति हंसा। उसने कहा- कारण यह है कि हम हर युद्ध के पहले परमात्मा से प्रार्थना करते थे। परमात्मा से की गई प्रार्थना का परिणाम है कि हम जीते और तुम हारे।

जर्मन सेनापति ने कहा- यह तो हद को गई, प्रार्थना तो हम भी करते थे! हर युद्ध के पहले। प्रार्थना कारण नहीं हो सकती, क्योंकि हमने कभी प्रार्थना में कोई चूक नहीं की।

अंग्रेज ने कहा लेकिन तुम किस भाषा में प्रार्थना करते थे?

जर्मन ने कहा निश्चित, जर्मन में।

अंग्रेज बोला बस, बात साफ हो गई। परमात्मा को जर्मन आती है? परमात्मा अंग्रेजी बोलता है। वहीं तुम्हारी चूक है।

दुनिया में तीन हजार भाषायें हैं। हर भाषा का दावेदार सोचता है यही परमात्मा की भाषा है। होनी ही चाहिए; जो मेरी भाषा है वह परमात्मा की भाषा होनी चाहिए। आदमी का अहंकार ऐसा है कि उसकी भाषा परमात्मा की भाषा, उसका रंग परमात्मा का रंग, उसकी ऊंचाई परमात्मा की ऊंचाई, उसका चेहरा परमात्मा का चेहरा। चीनी जब परमात्मा बनाते हैं तो नाक चपटी होती है उसकी। स्वभावत: चीनी और उसकी लंबी नाक बनायें, कोई अपना अपमान करेंगे? और जब नीग्रो उसकी प्रतिमा बनाता है तो उसके ओंठ बड़े मोटे होते हैं। अब नीग्रो और पतले ओंठ बनाये...! और नीग्रो जब उसकी प्रतिमा बनाता है तो बाल घुंघराले होते हैं। स्वाभाविक।

हम अपनी प्रतिमा में परमात्मा को गढ़ लेते हैं। हम अपनी ही छाया में परमात्मा को गढ़ लेते हैं। हमारी भाषा उसकी भाषा। हमारा जीवन उसका जीवन। हमारी जीवन की शैली उसके जीवन की शैली। हमारा आचरण उसका आचरण। हमारा शास्त्र उसके द्वारा दिया गया शास्त्र। ये सब अहंकार के ही उपाय हैं। अहंकार पीछे के रास्ते से अपने को भर रहा है।

ये धार्मिक आदमी के लक्षण नहीं हैं। न तो हमारा चेहरा उसका चेहरा है, न हमारी भाषा उसकी भाषा है, न हमारा रंग उसका रंग है। उसका कोई रंग नहीं है और सब रंग उसके हैं। उसकी कोई भाषा नहीं और सब भाषायें उसकी हैं। वह कभी नहीं बोला और जो भी आज तक बोला गया है, वही बोला।

इतना विरोधाभास तुम्हें एक साथ समझने की क्षमता हो तो ही तुम यात्रा कर पाओगे। परिभाषा तो विरोधाभास से बचने का उपाय है। परिभाषा का अर्थ होता है- साफ-सुथरी व्याख्या हो जाये तो हम चल सकें; दिशा का निर्देश हो जाये तो हम चल सकें।

सौ-सौ सांचे बना रहा तू,
किसी एक में मैं आ जाऊं!
यह तो ज्यों त्रिकोण के मुख में
वर्गाकार दंड को रखना!
यह तो जैसे कनक-कसौटी पर
हीरे का मोल परखना!
यह तो कठिन असंभव-सा है
जैसे गूंगे को पंचम स्वर!
मानो, कोई चला मापने
वामन अपने पद से अंबर!
तेरे ये सांचे सब सीमित,
मैं असीम किस भांति समाऊं!

नहीं, परमात्मा किसी परिभाषा में कभी समाया नहीं--अनुभव में जरूर आया है। अनुभव में खूब-खूब आया है! अनुभव में बाढ़ की भांति आया है। परिभाषा न मांगो, अनुभव मांगो! शब्द न मांगो, साक्षात मांगो। सिद्धांत न मांगो, शास्त्र न मांगो, स्वानुभूति मांगो।

लोक-लोक के द्वार खोल दो,
मैं कर सकूं तुम्हारा दर्शन!
तुम बैठे थे अंतर्तम में
जाने, कब से अंतर्वासी!
मैं तुमको पहचान न पाया;
तुम भी तो प्रभु, रहे उदासी!
कहां किसे मैं ढूंढ रहा था?
किसके लिये विकल था अब तक?
दो बूंदें उमडी आंखों में;
नत हो गया आप ही मस्तक!
पूछो मत, पूछो मत, मेरा
सुख क्या है? कैसा आनंद?
ईर्ष्या करो, तपो आजीवन;
समझो, मैं कितना स्वच्छंद!
आंसू से भीगी इच्छाएं
थीं, बन गयीं यज्ञ की ईंधन!
जैसे बिजली पकड़ ली गयी;
चमकी और हुई हो निश्चल!
जैसे पारावार प्रलय का,
राशि-राशि जल ही जल केवल!
यह अबाध उल्लास ज्योति का,
महा-हर्ष का झंझानिल है!
अग्नि-स्फुल्लिंग, छंद-गानों से
मुखरित जब हो रहा निखिल है!
सूर्य, चंद्र, नक्षत्र और ये
तारक-ग्रह जैसे अचपल हों!
जैसे दिवा-स्वप्न टूटा हो!
और नये ही दिग्मंडल हो,
अवलोकन करने दो मुझको
क्षण भर करो रहस्योदघाटन!
जिस दिन तुमको देखा, कोई
वस्तु देखने की न रही है;
कोई काम न कोई तृष्णा,
अपनी ही सम्पूर्ण मही है!
अहे अनिर्वच, क्या बतलाऊं?
कैसा रूप तुम्हारा है यह!
दिव, नीहार, धूम, विद्युत, या
तरल अग्नि का पारा है यह!
दिग्दिगन्त के रंध्र खोल दो;
लहराने दो ज्योति-समीरण!
लोक-लोक के द्वार खोल दो,
मैं कर सकूं तुम्हारा दर्शन!

प्रार्थना करो, परिभाषा न खोजो। पुकारो, परिभाषायें न बनाओ। जागो, खोजो। दूर नहीं है परमात्मा।तुम बैठे

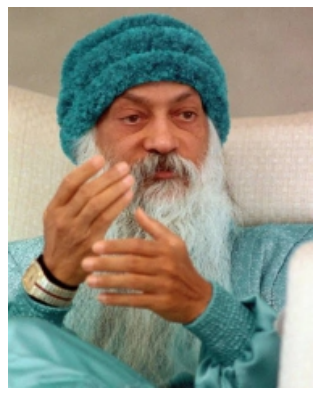

थे अंतर्तम में
जाने, कब से अंतर्वासी!

भीतर ही बैठा है तुम्हारे। जिसकी तुम परिभाषा खोज रहे हो वह तुम्हारे भीतर बैठा है। जिसकी तुम परिभाषा खोज रहे हो वह परिभाषा खोजनेवाले में छिपा है। लौटो, आंखें पलटाओ।

कहां किसे मैं ढूंढ रहा था?
किसके लिये विकल था अब तक?
जिस दिन जानोगे उस दिन चौंकोगे,
किसे खोजते थे? व्यर्थ ही खोजते थे,
व्यर्थ ही विकल थे। उसे तो कभी खोया ही न था, क्षण-भर को उससे नाता न टूटा था।
दो बूंदें उमड़ी आंखों में;
नत हो गया आप ही मस्तक!

प्रार्थना पूरी हो जाती है--बस दो बूंदें आंखों में उमड़ आयें। मस्तिष्क परिभाषा मांगता है; हृदय प्रेम। मस्तिष्क शब्द गढ़ता है रूखे-सूखे; हृदय गीले भाव जगाता है, आंसुओं से भरे। और मनुष्य के पास उसकी पूजा, अर्चना के लिये और कुछ भी नहीं है, सिवाय आंसुओं के। मत तोड़ो फूल वृक्षों से, उन फूलों को तुम पत्थर की मूर्तियों पर चढ़ाते रहोगे, समय गवांते रहोगे। आने दो फूल तुम्हारी आंखों में, तुम्हारे आंखों के फूल झरने दो। वे आंसू ही, वे गीले आंसू ही तुम्हें उससे जोड़ पायेंगे। परिभाषा तो न हो सकेगी, लेकिन एक दिन उल्लास का अनुभव होगा, उत्सव होगा।

यह अबाध उल्लास ज्योति का,
महा-हर्ष का झंझानिल है!
अग्नि-स्फुल्लिंग, छंद-गानों से
मुखरित जग हो रहा निखिल है!

अगर तुम शांत होकर, मौन होकर उसे पुकारोगे, तुम्हारी आंखों में आर्द्रता होगी प्रार्थना की, तो तुम पाओगे एक विराट उत्सव चल रहा है। इसी उत्सव का दूसरा नाम है परमात्मा।

अहे अनिर्वच, क्या बतलाऊं?
कैसा रूप तुम्हारा है यह!
दिव, नीहार, धूम, विद्युत या
तरल अग्नि का पारा है यह!
दिग्दिगंत के रंध्र खोल दो;
लहराने दो ज्योति-समीरण!
लोक-लोक के द्वार खोल दो,
मैं कर सकूं तुम्हारा दर्शन!

दर्शन मांगो, दृष्टि मांगो, परिभाषायें नहीं। मैं तुम्हें यहां परिभाषा देने को नहीं हूं। परिभाषा चाहिए, पंडितों के पास जाओ, वहां परिभाषाएं ही परिभाषाएं हैं। अनुभव मांगो यहां, दर्शन मांगो यहां, प्रतीति मांगो।

मैं तुम्हें नगद चीज देना चाहता हूं, उधार चीजें क्यों मांगते हो? मेरी परिभाषा किस काम पड़ेगी तुम्हारे? एक सूचना हो जायेगी, स्मृति में टंगी रह जायेगी। तुम्हारे जीवन का रूपांतरण ऐसे नहीं होगा। आग मांगो, कि जल जाओ उसमें, कि नये का जन्म हो, कि पुराने की मृत्यु।

ओशो

जागरूक शिक्षित महिला, परिवार, समाज और राष्ट्र की बुलंदी

मंजू गौतम के शब्दों में, 'जागरूक शिक्षित महिला परिवार की बुलंदी होती है।' यह कथन मात्र एक वाक्य नहीं, बल्कि एक अटल सत्य है जो हमारे समाज के उत्थान की कुंजी है। जब महिलाएँ जागरूक होंगी, तभी घर-परिवार और समाज वास्तविक अर्थों में जागरूक हो पाएगा।

एक छोटी बच्ची का जीवन उसके घर-परिवार और आस-पड़ोस से शुरू होता है। यहीं वह शिक्षा के प्राथमिक पाठ सीखती है, फिर स्कूल, गुरुजनों और समाज से ज्ञान अर्जित करके बड़ी होती है। आज 'बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ' का नारा गूंज रहा है, और यह खुशी की बात है कि हमारा समाज और परिवार मोटे तौर पर बेटियों की परवरिश और शिक्षा पर लगभग 90त्न ध्यान दे रहा है। यह एक सकारात्मक बदलाव है।

परंतु, जिस घर में लड़की को लड़के की तरह पाला जाता है, उस घर की बेटियाँ आज शिक्षा, विज्ञान, स्वास्थ्य, चिकित्सा, राजनीति, भू-विज्ञान और यहाँ तक कि अंतरिक्ष जैसे अनेकों क्षेत्रों में भी उड़ान भर रही हैं। वे किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं, बल्कि अपनी योग्यता और क्षमता का लोहा मनवा रही हैं।

इसके बावजूद, हमारा सर्व समाज अभी भी महिलाओं को उस दृष्टि से बराबरी की साझेदारी नहीं दे पा रहा है जिसकी वे हकदार हैं। कहीं-कहीं महिलाओं और बेटियों के साथ आज भी गहरा मतभेद किया जाता है। पढ़ाई पर जोर देने की बजाय, उन्हें पूजा-पाठ और व्रत जैसे पाखंडवाद में उलझाया जाता है। यह हमारे समाज की एक दुखद और गलत मानसिकता है। यदि हम इस मानसिकता को थोड़ी देर के लिए भी अपने दिमाग से निकाल दें और बेटा-बेटी को पढ़ाई के क्षेत्र में बराबर का दर्जा दें, तो हमारी बेटियाँ भी बेटों के समान सभी कार्यों में दक्ष हो सकती हैं।

वैज्ञानिकों और समाज के बुद्धिजीवी लोगों का मानना है कि महिलाओं में सहनशक्ति और सोचने की शक्ति पुरुषों से कहीं अधिक होती है। वैज्ञानिक तत्व भी इस बात की पुष्टि करते हैं।

महिलाओं को केवल जागरूक होने की आवश्यकता है। एक जागरूक महिला केवल स्वयं को ही नहीं, बल्कि कई अन्य महिलाओं को भी जागरूक करने की क्षमता रखती है। यह जागरूकता की लहर ही हमारे परिवारों, हमारे समाज और अंतत: हमारे राष्ट्र को प्रगति और बुलंदी के नए आयामों तक ले जाएगी। नारी का उत्थान ही वास्तव में समग्र समाज का उत्थान है।

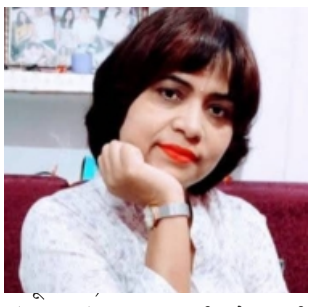

एंड फाउंडर : एन.जी.ओ. नारी स्वयं अंतरिक्ष उत्थान भारत, दिल्ली

हरियाणा सरकार का बड़ा कदम, सीईटी पास बेरोजगार युवाओं को हर महीने मिलेंगे 9000

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

चंडीगढ़ । हरियाणा सरकार ने राज्य के बेरोजगार युवाओं को आर्थिक संबल प्रदान करने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने 'हरियाणा सीईटी पास भत्ता योजना 2025' का शुभारंभ किया है, जिसके तहत उन युवाओं को हर महीने 9,000 रुपये की वित्तीय सहायता दी जाएगी, जिन्होंने कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट (सीईटी) पास कर लिया है लेकिन एक साल के भीतर सरकारी नौकरी प्राप्त नहीं कर पाए हैं।

यह योजना उन हजारों युवाओं के लिए एक बड़ी राहत बनकर आई है जो सरकारी नौकरी पाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन विभिन्न कारणों से तत्काल सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। इस स्कीम का मुख्य उद्देश्य ऐसे युवाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है ताकि वे अपने आगामी प्रयासों के लिए प्रेरित रह सकें और बेरोजगारी के दौरान होने वाली कठिनाइयों का सामना कर सकें।

योजना के मुख्य बिंदु

पात्रता: योजना का लाभ उठाने के लिए आवेदक को हरियाणा का स्थायी निवासी होना अनिवार्य है। उसे हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग (एचएसएससी) द्वारा आयोजित कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट (सीईटी) पास करना होगा, जो ग्रुप सी और डी की सरकारी नौकरियों के लिए आवश्यक है।

लाभ की अवधि और राशि: यदि कोई उम्मीदवार सीईटी परीक्षा पास करने के बाद एक साल तक सरकारी नौकरी प्राप्त नहीं कर पाता है, तो वह इस योजना के तहत पात्र हो जाएगा। पात्र युवाओं को दो साल तक, हर महीने 9,000 रुपये की वित्तीय सहायता सीधे उनके बैंक खातों में जमा की जाएगी।

उदाहरण: यदि कोई उम्मीदवार जुलाई 2025 में होने वाली सीईटी परीक्षा पास करता है और अगले एक साल (जुलाई 2026 तक) उसे कोई सरकारी नौकरी नहीं मिलती, तो वह स्वत: इस योजना के तहत शामिल

हो जाएगा और उसे वित्तीय सहायता मिलनी शुरू हो जाएगी।

स्वचालित आवेदन प्रक्रिया

हरियाणा सीईटी पास भत्ता योजना की सबसे खास और सुविधाजनक विशेषता इसकी आवेदन प्रक्रिया है। इस योजना के लिए किसी अलग से आवेदन करने की आवश्यकता नहीं होगी। जो उम्मीदवार सीईटी परीक्षा पास करेंगे और एक साल तक बेरोजगार रहेंगे, उन्हें सरकारी डेटाबेस के माध्यम से स्वचालित रूप से इस योजना में शामिल कर लिया जाएगा। यह प्रक्रिया न केवल युवाओं का बहुमूल्य समय बचाएगी, बल्कि कागजी कार्रवाई की जटिलताओं को भी कम करेगी, जिससे पारदर्शिता और सुविधा सुनिश्चित होगी।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि यह योजना युवाओं को भविष्य के लिए तैयार करने और उन्हें बेरोजगारी के दौरान भी गरिमापूर्ण जीवन जीने में मदद करने के लिए शुरू की गई है। सरकार का लक्ष्य है कि कोई भी सीईटी पास युवा, जिसे नौकरी नहीं मिल पाई है, आर्थिक तंगी के कारण हताश न हो।

यह कदम हरियाणा सरकार की युवा केंद्रित नीतियों का हिस्सा है और इसे राज्य में शिक्षित बेरोजगारों के लिए एक बड़ा सहारा माना जा रहा है।

करनाल के प्रतिभाशाली एथलीट राजेश खन्ना को खेल मंत्री ने किया सम्मानित

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र धूमसी

करनाल । राज्य के खेल मंत्री गौरव गौतम ने करनाल के प्रतिभाशाली एथलीट और एयर फोर्स से सेवानिवृत्त राजेश खन्ना को सम्मानित किया। यह सम्मान उन्हें हाल ही में ताइवान में आयोजित वर्ल्ड मास्टर्स गेम्स 2025 और केरल में संपन्न नेशनल मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में पदक जीतने के उपलक्ष्य में दिया गया।

राजेश खन्ना ने अपनी मेहनत, अनुशासन और समर्पण के बल पर अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा का नाम रोशन किया है। वर्ल्ड मास्टर्स गेम्स जैसे प्रतिष्ठित वैश्विक मंच पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर उन्होंने न केवल राज्य बल्कि देश का भी गौरव बढ़ाया है। इससे पहले भी वे विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीत चुके हैं और युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।

राजेश खन्ना ने अपने संबोधन में इस सम्मान के लिए हरियाणा सरकार और खेल मंत्री का धन्यवाद किया और कहा कि वे भविष्य में भी

खेलों के माध्यम से समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। राजेश खन्ना की यह उपलब्धि न केवल उनके लिए बल्कि पूरे हरियाणा के लिए गर्व का विषय है। उनके जैसे खिलाड़ियों की मेहनत और लगन से ही हरियाणा आज देश के अग्रणी खेल राज्यों में गिना जाता है।

निशानेबाज प्रिंस शर्मा ने नेशनल में सिल्वर मेडल जीतकर चंडीगढ़ का नाम रौशन किया

गजब हरियाणा न्यूज
डॉ जरनैल रंगा

चंडीगढ़। गवर्नमेंट मॉडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल सेक्टर 35डी चंडीगढ के निशानेबाज प्रिंस शर्मा ने अभी हाल ही में एक जून से लेकर 6 जून तक देहरादून में नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एनआरएआई) द्वारा आयोजित ओपन नेशनल कॉम्पिटिशन की युथ कैटेगरी के 25 मीटर पिस्टल (.22 बोर) (25-मीटर पिस्टल (.22 बोर) इवेंट में सिल्वर मेडल जीतकर चंडीगढ का नाम रौशन किया। प्रिंस के स्कूल पहुँचने पर स्कूल की प्रिंसीपल निर्दोष कुमारी ने मेडल पहनाकर सम्मानित किया। वहीं स्कूल के निशानेबाज द्वारा मेडल जीतने पर प्रिंसिपल ने स्कूल के स्पोर्ट्स टीचर कुलदीप मेहरा को बधाई दी।

गुरु पूर्णिमा पर सतगुरु रविदास महाराज के प्राचीन स्थल पर सजा कीर्तन दरबार, संगत हुई निहाल

गजब हरियाणा न्यूज/रविंद्र

पिपली । गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर शिरोमणि सतगुरु रविदास महाराज जी के प्राचीन ऐतिहासिक स्थान पर एक भव्य कीर्तन दरबार सजाया गया। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र और आसपास के क्षेत्रों से भारी संख्या में संगतों (भक्तों) ने शिरोमणि सतगुरु रविदास महाराज जी की महिमा का भावपूर्ण बखान किया। यह दिन गुरु-शिष्य परंपरा और ज्ञान के महत्व को समर्पित था।

कीर्तन दरबार में उपस्थित प्रचारक रीटा सोलंकी ने अपनी मधुर वाणी से संगतों को निहाल कर दिया। उन्होंने 'सुनिया तेरे दर तों दाता, ना खाली कोई मुड़िया। धरती दे भाग जाग पए, जीथे तूं कदम धरेया।' शब्द गाकर गुरु महाराज की कृपा और उनके आगमन से धरती पर हुए शुभ बदलाव को दर्शाया। इसके बाद, उन्होंने 'गुरु मेरी पूजा, गुरु गोबिंद। गुरु मेरा पार ब्रह्म, गुरु गोबिंद।' गाकर गुरु को परम ब्रह्म और ईश्वर के समान बताया, जो भक्ति मार्ग में गुरु के सर्वोच्च स्थान को दर्शाता है। रीटा सोलंकी ने 'तेरी संगत विच बैठके, तर जांदियां ने बेड़ियां।' गाकर यह संदेश दिया कि गुरु की संगति में बैठकर जीवन की बाधाएं और मुश्किलें दूर हो जाती हैं।

इस आध्यात्मिक वातावरण में डॉ. जरनैल रंगा ने भी अपने गायन से संगतों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने शिरोमणि सतगुरु रविदास महाराज जी की पावन पवित्र बाणी 'मन अपने गुरु गुरु रटो, कभी न आवे भीर, चौदह रत्न उपाया, सतगुरु गुणी गहिर' गाकर यह बताया कि गुरु के नाम का स्मरण करने से जीवन के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। और 'भर भर झोलियां लुटाई जांवदा जी माता कलसां दा लाडला' जैसे शब्द गाकर गुरु महाराज के अद्भुत गुणों और उनके विशाल हृदय का वर्णन किया, जिससे पूरा पंडाल भक्ति के रंग में सराबोर हो गया और संगत झूमने पर मजबूर हो गई।

इस मौके पर वीरेंद्र रॉय, राजबीर सिंह, कुलदीप सिंह, बाला देवी, संतोष रानी, बिमला, रिंकी, बबली, अंजू, मोनिका, बेअंत कौर, कांता, नसीबों, सर्वजीत रानी, कमलेश मौजूद रही।

सीएम ने हर घर में नल से जल पहुंचाने के लिए चलाई महत्वपूर्ण योजना: कैलाश सैनी

गजब हरियाणा न्यूज/ डॉ जरनैल रंगा

लाडवा/कुरुक्षेत्र । मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रभारी कैलाश सैनी ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की हर घर में नल और हर नल में जल योजना के तहत घरों तक पाइपलाइन के माध्यम से पानी पहुंचाने के लिए बुनियादी ढांचे का विकास किया जा रहा है। इस योजना के तहत लाडवा विधानसभा में क्षेत्रों को चिन्हित कर इस योजना के तहत काम करवाया जा रहा है। लाडवा विधानसभा के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के लिए करोड़ों रुपए के विकास कार्य हो रहे हैं।

मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रभारी कैलाश सैनी शनिवार को नगर पालिका लाडवा के वार्ड नम्बर 14 में बने जलघर के नए ट्यूबवेल का उद्घाटन करने उपरांत बोल रहे थे। मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रभारी कैलाश सैनी का वार्ड 14 के पार्षद ललितेस शर्मा ने स्वागत किया और वार्ड के लोगों पानी की दिक्कत का समाधान करने पर आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रभारी कैलाश सैनी ने अधिकारियों को जलघर के सौंदर्यीकरण और पुराने जलघर की रेलिंग बनाने के लिए निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रभारी कैलाश सैनी ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की हर घर में नल और हर नल में जल योजना एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य सभी घरों में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। इस योजना के तहत सरकार घरों तक पाइपलाइन के माध्यम से पानी पहुंचाने के लिए बुनियादी ढांचे का विकास करती है। साथ ही पानी की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि इस योजना में जल संचयन और प्रबंधन के लिए भी प्रावधान किए जाते हैं। स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से जल जनित बीमारियों की रोकथाम में मदद मिलती है। स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से लोगों के जीवन स्तर में सुधार होता है।

इस अवसर पर हरीश सचदेवा, कपिल शर्मा, राजेश शर्मा, राजेंद्र कुमार, राजू, अरुण शर्मा, छत्रपाल पब्लिक हेल्थ, नरेश, अमित शर्मा, अशोक, सुरेश, महेंद्र सैनी, पार्थ शर्मा मौजूद रहे।

श्री गुरु रविदास विश्राम धाम में अमृतबाणी का चौथा स्थापना दिवस धूमधाम से मना

स्वामी गुरदीप गिरी महाराज ने श्रद्धालुओं को किया निहाल

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

नई दिल्ली । 6 जुलाई को श्री गुरु रविदास विश्राम धाम, देवनगर, करोल बाग में अमृतबाणी के चौथे स्थापना दिवस का पावन अवसर बड़े ही श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर स्वामी गुरदीप गिरी महाराज जी ने अपनी अमृतमयी वाणी से उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं पर कृपा की वर्षा की। उन्होंने इस गुरु घर में पहली बार आने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, 'आज हम पहली बार इस गुरु घर में आए हैं। यहां देवतों का वास है, देवों के नगर देव नगर की सभी संगतों को जय गुरुदेव।'

स्वामी जी ने सतगुरु रविदास महाराज जी की पवित्र बाणी 'तुम चंदन हम ईरंड बापुरे, संघ तुम्हारे वासा। नीच रुख ये ऊंच भए है गंध सुगंध निवासा' से अपने प्रवचनों की शुरुआत की। उन्होंने इसकी व्याख्या करते हुए फरमाया कि सतगुरु जी कहते हैं जो चंदन का संग करेगा, वह चंदन बन जाएगा। जिस प्रकार चंदन के वृक्ष के पास यदि साधारण ईरंड का पेड़ भी हो, तो उसमें से भी चंदन की खुशबू आनी शुरू हो जाती है, ठीक उसी प्रकार, यदि एक सामान्य इंसान संतों की संगत करता है, तो उसमें भी सद्गुण आ जाते हैं और वह अपनी बुराइयों को त्याग देता है।

स्वामी जी ने समाज में व्याप्त बुराइयों पर प्रकाश डालते हुए विशेष रूप से नशे पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि नशा सभी बुराइयों की जड़ है, जिसके कारण परिवार के परिवार तबाह हो गए हैं। उन्होंने यह भी समझाया कि सच्ची सुख-शांति बाहरी तीर्थ यात्राओं से नहीं मिलती, बल्कि यह हमारे अपने भीतर से आती है। जब अंत:करण शुद्ध होगा, हम सबका भला करेंगे, किसी की निंदा, चुगली या ईर्ष्या नहीं करेंगे, तभी वास्तविक सुकून प्राप्त होगा।

इस अवसर पर डेरा स्वामी जगतगिरी आश्रम पठानकोट के महासचिव डॉ. सोमा अत्री ने आश्रम की गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। मंच पर छोटी बेटी दृष्टि ने भी मनमोहक शब्द गाकर उपस्थित संगत को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस पावन अवसर पर संत केसी रवि जी ने भी अपने प्रेरणादायक वचनों से संगत को निहाल किया। उनके अतिरिक्त, कई अन्य संतों ने भी प्रवचन दिए, आध्यात्मिक शांति का मार्ग दिखाया और विश्व शांति के लिए मंगल कामना की। समारोह में विधानसभा प्रधान विशेष रवि और कुछ अन्य मंत्रीगण भी उपस्थित थे, जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण सुझाव साझा किए और विश्व शांति एवं विश्व एकता का नारा बुलंद किया।

इस अवसर का लाभ उठाने वालों में ग्लोबल रविदासिया वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन (यूरोप) के भारत के अध्यक्ष शेर सिंह राणा, कुरुक्षेत्र से गजब हरियाणा समाचार पत्र के संपादक डॉ. जरनैल सिंह रंगा, नौरंग राम और रविंद्र कुमार जैसे गणमान्य व्यक्ति भी शामिल थे। यह समारोह भक्ति, ज्ञान और सामाजिक चेतना का एक अद्भुत संगम था, जिसने उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। स्थापना दिवस समारोह की शुरुआत अमृत वेले में प्रभात फेरी के साथ हुई। इस प्रभात फेरी में पंजाब से बाबा अमरजीत द्वारा वाणी के जाप कराए गए, जिसमें जम्मू-कश्मीर से हेमराज सतैनी, रतन लाल, चंडीगढ़ से माया राम और दिल्ली के करोलबाग की सभी सभाएँ शामिल हुईं। सुबह 6 बजे निकाली गई यह प्रभात फेरी पूरे करोलबाग में घूमकर संपन्न हुई, जिसमें भजन-कीर्तन और वाणी का पवित्र उच्चारण किया गया।

इस भव्य समारोह को सफल बनाने में धाम के प्रधान गोपाल कृष्ण, सेक्रेटरी बिजेंद्र कुमार, सदस्य चमन लाल और सदस्य लक्ष्मी नारायण ने मुख्य भूमिका निभाई।

कुरुक्षेत्र में प्रतिभा सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

गजब हरियाणा न्यूज/डॉ जरनैल रंगा

कुरुक्षेत्र । साहित्य और संविधान, पढ़ो पढ़ाओ अभियान के तत्वावधान में आज ऐतिहासिक धरा, कुरुक्षेत्र पर एक प्रतिभा सम्मान समारोह 2025 का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। यह आयोजन विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का सम्मान भी था और संविधान, साहित्य और राष्ट्र निर्माण के मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा भी।

कार्यक्रम का आयोजन ढांड रोड पर स्थित स्वामी गोरक्षानंद आश्रम, कुरुक्षेत्र में किया गया, जिसमें पूरे हरियाणा राज्य से चयनित 10वीं और 12वीं कक्षा के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों ने भाग लिया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में के.एस. भोरिया (सेवानिवृत्त आईएएस, पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार) तथा डॉ. कश्मीर सिंह (सेवानिवृत्त आईपीएस, पूर्व एडीजीपी, उत्तर प्रदेश) ने शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. राज रूप फुलिया (सेवानिवृत्त आईएएस, पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार तथा पूर्व कुलपति—गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार तथा चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा ने की।

अपने प्रेरणादायक संबोधनों में अतिथियों ने कहा कि भारत के संविधान की आत्मा तभी जीवित रह सकती है जब हमारी युवा पीढ़ी शिक्षा के साथ-साथ संवैधानिक मूल्यों को भी अपनाए। उन्होंने विद्यार्थियों को परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने के साथ साथ, चरित्र निर्माण करने तथा विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जीवन जीने का संदेश दिया।

इस कार्यक्रम में 12वीं कक्षा के राज्य स्तरीय टॉपर्स अर्पनदीप सिंह — राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सिओं माजरा (कैथल), करीना — रचना वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, माणौली (सोनीपत), यशिका — एस.डी. कन्या महाविद्यालय, नरवाना (जींद) और सरोज—डी.एन. मॉडल स्कूल, नरवाना रोड, जींद (जींद) आमंत्रित थे।

कक्षा 10वीं के राज्य स्तरीय टॉपर्स (2025) में रोहित — सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बुआना लाखू,-पानीपत से माही — न्यू सरस्वती वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नगला राजपूतान (अंबाला), रोमा — सी.आर. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, माजरा डूबालधन (झज्जर), तानिया — सी.आर. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, माजरा डूबालधन (झज्जर), (पानीपत) योगेश — शहीद भगत सिंह वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मटौर (कैथल), दिव्यांशी — एस.वी.एम. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कहनौर (रोहतक) सुनयना—आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, डाटा (हिसार), दीक्षा — सही राम वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मेहम (रोहतक) और निधि — एस.डी. कन्या महाविद्यालय, नरवाना (जींद) आमंत्रित थे।

इनके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र जिले के अनुसूचित जाति संवर्ग के लगभग 150 ऐसे छात्र-छात्राओं को भी सम्मानित किया गया, जिन्होंने कक्षा 10वीं में 85त्न से अधिक अंक प्राप्त कर जिले का नाम रोशन किया। सभी विद्यार्थियों को प्रतीक चिन्ह और मेडल भेंट कर सम्मानित किया गया।

समारोह के दौरान उपस्थित सभी अतिथियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों, अभिभावकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस आयोजन को एक 'संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला' की संज्ञा दी। छात्रों ने इस सम्मान को अपने जीवन की दिशा तय करने वाला क्षण बताया।

डॉ. राज रूप फुलिया ने कहा, 'शिक्षा का अर्थ सिर्फ परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायी, संवेदनशील और संविधान के प्रति प्रतिबद्ध नागरिक बनना है। जब छात्र संविधान पढ़ते हैं, तो उन्हें अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का भी बोध होता है।' उन्होंने संविधान की प्रस्तावना का विशेष रूप से वर्णन करते हुए विद्यार्थियों से 'समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और न्याय' के आदर्शों पर चलने का आह्वान किया।

पूरा आयोजन विद्यार्थियों के आत्म विश्वास को नई उड़ान देने में सफल हुआ। यह केवल सम्मान का मंच नहीं था, बल्कि यह एक वैचारिक आंदोलन बनकर उभरा जिसने शिक्षा, साहित्य और संविधान को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त प्रयास किया।

हरियाणा और आठ पड़ोसी राज्यों में छात्रों को नि:शुल्क मार्गदर्शन दे चुके शिक्षाविद और समाजसेवी डॉ. रणजीत सिंह फुलिया ने भी छात्रों को प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन संगोहा, जिला करनाल के प्रिंसिपल जगदीश चंद्र ने किया।

मूलनिवासी संघ ने सीवन थाने की पीड़िता ममता को न्याय दिलाने की मांग की

गजब हरियाणा न्यूज/ब्यूरो

कैथल । मूलनिवासी संघ ने कैथल में भीम आर्मी द्वारा आयोजित प्रदर्शन में भाग लिया, जिसका उद्देश्य सीवन थाने की पीड़िता ममता को न्याय दिलाना था। मूलनिवासी संघ के केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य जिले सिंह सभरवाल और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष हवा सिंह भौरिया के नेतृत्व में संघ के कई सदस्य प्रदर्शन में शामिल हुए।

प्रदर्शन के बाद, सभरवाल और भौरिया सहित एक शिष्टमंडल ने सिविल अस्पताल कैथल में पीड़िता ममता से मुलाकात की। शिष्टमंडल में पी.एल. चौधरी, डॉ. कर्मबीर टंडन, चुड़िया राम, सुनील निम्बैरन, सुरेश द्रविड़, एडवोकेट राजेश कापड़ो और कामरेड फूल सिंह भी शामिल थे।

पीड़िता से पूरे हालात की जानकारी लेने के बाद, एडवोकेट जिले सिंह सभरवाल ने कैथल की पुलिस अधीक्षक पर अपराधियों को बचाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि ममता का उत्पीड़न करने वाले पुलिसकर्मी अभी

भी अज्ञात हैं, सीसीटीवी फुटेज की जांच नहीं की गई है, और ममता का मेडिकल ठीक से नहीं कराया गया है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि पीड़िता को फंसाने के लिए दूसरे पक्ष का इस्तेमाल किया जा रहा है।

सभरवाल ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यदि कानून के रखवाले ही महिलाओं का उत्पीड़न करेंगे तो समाज का ताना-बाना बिखर जाएगा। उन्होंने दोषियों के खिलाफ अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज करने की मांग की। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि स्थानीय प्रशासन ने कार्रवाई नहीं की तो मूलनिवासी संघ पूरे प्रदेश में ज्ञापन देगा।

निराश्रित बच्चों को दी जा रही है प्रति माह 1850 रुपये की वित्तीय सहायता :उपायुक्त

गजब हरियाणा न्यूज/नरेंद्र धूमसी

करनाल। उपायुक्त उत्तम सिंह ने बताया कि जिला में 21 वर्ष तक की आयु का बच्चा जो अपने माता-पिता की सहायता अथवा देखभाल से उनकी मृत्यु होने के कारण, अपने पिता के घर से पिछले 2 वर्ष की अवधि से अनुपस्थित होने के कारण अथवा माता-पिता के लम्बी सजा, जोकि एक वर्ष से कम न हो या मानसिक व शारीरिक अक्षमता के कारण वंचित हो जाते हैं और जिनके माता-पिता, अभिभावक की सभी साधनों से वार्षिक आय दो लाख से अधिक नहीं है। वह बच्चा हरियाणा सरकार के सामाजिक न्याय एवं सहकारिता विभाग द्वारा दी जा रही वित्तीय सहायता का लाभ पात्र है। उन्होंने बताया कि उपरोक्त विभाग द्वारा एक परिवार में दो बच्चों तक 1850 रुपये प्रति माह प्रति बच्चा पेंशन प्रदान की जा रही है।

उन्होंने बताया कि उपरोक्त स्कीम का लाभ लेने के इच्छुक व्यक्ति के पास बेसहारा होने का प्रमाण पत्र, बच्चों के स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी जन्म प्रमाण पत्र व आवेदक का 5 वर्ष या उससे अधिक की अवधि का हरियाणा राज्य का निवासी होने का दस्तावेज जैसे कि फ़ोटोयुक्त वोटर कार्ड या राशन कार्ड आदि की स्वयं सत्यापित फोटो प्रति सहित परिवार पहचान पत्र होना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि आवेदक के पास यदि उपरोक्त दस्तावेजों में से कोई दस्तावेज नहीं है, तो वह कोई अन्य प्रमाण पत्र सहित 5 वर्ष से हरियाणा में रिहायश का हलफनामा दे सकता है। उन्होंने कहा कि यदि बच्चे के माता-पिता या अभिभावक किसी भी सरकार द्वारा पारिवारिक पेंशन प्राप्त कर रहा है, वो उपरोक्त स्कीम का लाभ नहीं ले पाएंगे। स्कीम का लाभ लेने के इच्छुक प्रार्थी अपने नजदीकी अंत्योदय सरल केंद्र, अटल सेवा केंद्र सहित सीएससी केंद्र पर आवेदन कर सकते हैं।

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक जरनैल सिंह द्वारा ढिंगरा प्रिंटिंग प्रैस, अग्रसैन चौंक, मोहन नगर, कुरुक्षेत्र से छपवाकर कार्यालय 'गजब हरियाणा' कोठी नं0 890 पी, सैक्टर-4, अर्बन इस्टेट कुरुक्षेत्र जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा से प्रकाशित व मुद्रक किया। सम्पादक जरनैल सिंह (91382-03233) Registration Namber : HAR/HIN/2018/77311